जुलाई 2023

# दादावाणी

Retail Price ₹ 20

व्यवहार की सभी कड़ियाँ मिलनी चाहिए। वे सभी कड़ियाँ हमारे पास हैं।
हमारे पास बोधकला और ज्ञानकला, दोनों ही कलाएँ हैं।
बोधकला से व्यवहार शुद्ध होता है और ज्ञानकला से मुक्ति होती है।

## वडोदरा : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 13-14 मई 2023

## अडालज : सत्संग - ज्ञानविधि : ता. 20-21 मई 2023

## अडालज हिन्दी शिविर : ता. 24 से 28 मई 2023

पुस्तक विमोचन

दर्शन

मूर्तियों की प्रतिष्ठा

सत्संग - ज्ञानविधि

गरबा

वर्ष : 18 अंक : 9
अखंड क्रमांक : 213
**जुलाई 2023**
**पृष्ठ - 28**

**Editor : Dimple Mehta**
© 2023
Dada Bhagwan Foundation
All Rights Reserved.
**Printed & Published by**
**Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation**
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

**Owned by**
**Mahavideh Foundation**
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

**Printed at**
**Amba Multiprint**
Opp. H B Kapadiya New High School, At-Chhatral, Tal: Kalol, Dist. Gandhinagar - 382729

**Published at**
**Mahavideh Foundation**
Simandhar City, Adalaj,
Dist.-Gandhinagar - 382421

**संपर्क सूत्र :**
**त्रिमंदिर,** सीमंधर सिटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ-वे,
पो.ओ.: **अडालज,**
जि.: गांधीनगर-382421.
**फोन :** 9328661166-77
email: dadavani@dadabhagwan.org
**www.dadabhagwan.org**
दादावाणी संबंधी शिकायत के लिए:
+91 8155007500

**सबस्क्रिप्शन ( सदस्यता शुल्क )**
**5 साल**
भारत : 1000 रुपये
**वार्षिक**
भारत : 200 रुपये
भारत में D.D./M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के नाम से संपर्कसूत्र के पते पर भेजें।

# दादावाणी

## कल्याण हेतु व्यवहार कला सिखाए 'ज्ञानी'

### संपादकीय

अक्रम विज्ञान में परम पूज्य दादा भगवान (दादाश्री) ज्ञानविधि में महात्माओं को शुद्धात्मा पद में बैठा देते हैं। उसके बाद आत्मा की जागृति में रहकर जीवन व्यवहार पूर्ण करने के लिए पाँच आज्ञा भी देते हैं। फिर भी यह तो कलियुग का व्यवहार, इतना अधिक उलझन वाला है कि एक उलझन का हल लाते हुए दूसरी सात पड़ जाती है।

ज्ञान से पहले और बाद में क्या दादाश्री का व्यवहार नहीं था? था ही, उन्हें भी अनेक अड़चनें आई परंतु उसके सामने उनकी व्यवहारिक बोधकला और पॉज़िटिव दृष्टि से वे बहुत ही सिफ़त से इस संसार सागर को पार कर सके। वे हमेशा कहते थे, कि जब तक व्यवहार शुद्ध नहीं हो जाता तब तक मोक्ष नहीं है। जैसे-जैसे क्रोध-मान-माया-लोभ कम होते जाते हैं, वैसे-वैसे उलझनों को हल करने की व्यवहारिक सूझ खिलती जाती है।

व्यवहार का हल लाने के सार में दादाश्री हमेशा कहते थे कि किसी भी संयोगों में एडजस्ट होना आए, उसे मनुष्य कहते हैं। जिसे इस संसार से छूटना है, वह सभी के साथ एडजस्ट होकर मिल जुलकर रहे तो कॉमनसेन्स उत्पन्न होता है। 'कॉमनसेन्स' वाला घर में या बाहर कहीं भी झगड़ा होने ही नहीं देता। जहाँ सामने वाले को खुश रखने के पीछे कोई मतलब न हो या कोई स्वार्थ परिणाम न हो वहाँ कम्प्लीट कॉमनसेन्स उत्पन्न होगा।

दादाश्री पूर्व का इतना अच्छा डेवेलपमेन्ट लेकर आए थे कि किसीको किंचित्मात्र दु:ख न हो, ऐसा उनका 'पॉज़िटिव' अहंकार था। बचपन से निरंतर दूसरों के सुख के लिए ही जीवन जिया। सामने वाला अपकार करे, नुकसान करे उसके सामने हमेशा उपकार भाव ही किया है, इसलिए वे सुपरह्यूमन के रूप में पहचाने गए। अपने हिस्से का सुख ज़रूरत होने के बावजूद भी अड़चनें उठाकर दूसरों को दे दें, अपने लिए विचार भी न आए, वह कारुण्यता कहलाती है और इसीलिए उसके फलस्वरूप उन्हें यह ज्ञान प्रकट हुआ।

दादाश्री हमेशा कहते थे, कि हमने इस संसार व्यवहार की उलझनों को हल करने की बहुत सूक्ष्म खोज की थी। व्यवहार में किस तरह रहना है और साथ ही मोक्ष में किस तरह जा सकें, वह भी देते हैं। आपकी व्यवहारिक अड़चनें कैसे कम हों, वही हमारा हेतु है।

प्रस्तुत अंक में, जीवन जीने की विविध बोधकलाओं में से कुछ कलाओं का विशेष उल्लेख हुआ है, जैसे कि एडजस्टमेन्ट लेने से कॉमनसेन्स, सूझ खिलेगी और हमारे द्वारा किसी को दु:ख न हो, हमेशा सुख हो, ऐसे भाव से ही अपना भीतर का सुख प्रकट होगा। हम सभी महात्मा ज्ञानी की इस बोधकला को समझकर पॉज़िटिव दृष्टि विकसित करें, ताकि व्यवहार आदर्श हो जाए और मोक्षमार्ग में आत्मकल्याण हेतु पुरुषार्थ में प्रगति कर सकें, ऐसी हृदयपूर्वक अभ्यर्थना।

**- जय सच्चिदानंद**

# कल्याण हेतु व्यवहार कला सिखाए 'ज्ञानी'

'दादावाणी' सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलत: गुजराती 'दादावाणी' का हिन्दी रूपांतर है। कोष्ठक में दिए गए शब्द या तो अंग्रेज़ी शब्द का अर्थ हैं अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किए गए वाक्यांश है। यहाँ पर 'आत्मा' शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। जहाँ पर भी 'चंदूभाई' नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर पाठक खुद को समझें। 'दादावाणी' के इस अंक में अगर आप कोई बात न समझ पाएँ तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधारकर समाधान प्राप्त करें। अनुवाद में कोई कमी नज़र आए तो हमें सूचित करने की कृपा करें, ताकि भविष्य में सुधार किया जा सकें। ऐसी क्षतियों के लिए हम आपके क्षमाप्रार्थी है।

## जगत् को 'फिट' हो जाएँ, तो दुनिया अच्छी है

संसार में और कुछ नहीं आए तो हर्ज नहीं, लेकिन 'एडजस्ट' होना तो आना ही चाहिए। सामने वाला 'डिसएडजस्ट' होता रहे, लेकिन आप 'एडजस्ट' होते रहो, तो संसार तैरकर पार उतर जाओगे। जिसे दूसरों को अनुकूल होना आया, उसे कोई दु:ख ही नहीं रहता। एडजस्ट एवरीव्हेर!

व्यवहार निभाना किसे कहेंगे कि जो 'एडजस्ट एवरीव्हेर' हो जाए! अब डेवेलपमेन्ट का ज़माना आया है। मतभेद नहीं होने देना! इसलिए अभी लोगों को मैंने सूत्र दिया है, एडजस्ट एवरीव्हेर! एडजस्ट, एडजस्ट, एडजस्ट!

**प्रश्नकर्ता :** व्यवहार में रहना है, इसलिए 'एडजस्टमेन्ट' एक पक्षीय तो नहीं होना चाहिए न?

**दादाश्री :** व्यवहार तो उसी को कहेंगे कि, 'एडजस्ट' हो जाएँ ताकि पड़ोसी भी कहें कि 'सभी घरों में झगड़े होते हैं, लेकिन इस घर में झगड़ा नहीं है'। उसका व्यवहार सर्वोत्तम कहलाएगा। जिसके साथ रास न आए, वहीं पर शक्ति विकसित करनी है। अनुकूल है, वहाँ तो शक्ति है ही। रास न आना, वह तो कमज़ोरी है। मुझे सब के साथ क्यों रास आता है? जितने एडजस्टमेन्ट लोगे, उतनी शक्तियाँ बढ़ेंगी और अशक्तियाँ टूट जाएँगी। सही समझ तो तभी आएगी, जब सभी प्रकार की उल्टी समझ को ताला लग जाएगा। नरम स्वभाव वालों के साथ तो हर कोई एडजस्ट होगा लेकिन अगर टेढ़े, कठोर, गर्म मिज़ाज लोगों के साथ, सभी के साथ एडजस्ट होना आ गया तो काम बन गया। कितना ही नंगा-लुच्चा मनुष्य क्यों न हो, फिर भी उसके साथ एडजस्ट होना आ जाए, दिमाग़ फिरे नहीं, तो वह काम का है! भड़क जाओगे तो नहीं चलेगा। संसार की कोई चीज़ हमें 'फिट' नहीं होगी, हम ही उसे 'फिट' हो जाएँ, तो यह दुनिया अच्छी है और यदि उसे 'फिट' करने गए तो दुनिया टेढ़ी है। इसलिए 'एडजस्ट एवरीव्हेर'! आप उसे 'फिट' हो जाओ तो कोई हर्ज नहीं है।

**प्रश्नकर्ता :** बहुत बार ऐसा होता है कि एक समय में दो लोगों के साथ एक ही बात पर 'एडजस्टमेन्ट' लेना होता है, तो एक ही समय में सभी ओर किस तरह ले सकते हैं?

**दादाश्री :** दोनों के साथ लिया जा सकता है। अरे, सात लोगों के साथ भी लेना हो, तब भी लिया जा सकता है। एक पूछे, 'मेरा क्या किया?' तब कहें, 'हाँ भाई, तेरे कहे अनुसार करूँगा'। दूसरे को भी ऐसा कहें, 'आप कहोगे वैसा करूँगा'। 'व्यवस्थित' के बाहर होने वाला नहीं है, इसलिए कुछ भी करके झगड़ा मत होने देना। मुख्य चीज़ एडजस्टमेन्ट है। 'हाँ' से मुक्ति है। हमने 'हाँ' कहा, फिर भी 'व्यवस्थित' से बाहर कुछ होने वाला है? लेकिन 'नहीं' कहा तो महा-*उपाधि* (परेशानी)!

## संयोगों के साथ एडजस्ट हो जाए, उसे मनुष्य कहते हैं

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ प्रिन्सिपल

(सिद्धांत) होने ही चाहिए। फिर भी संयोगानुसार वर्तन करना चाहिए। संयोगों के साथ एडजस्ट हो जाए, उसे मनुष्य कहते हैं। यदि प्रत्येक संयोग में एडजस्टमेन्ट लेना आ जाए तो पूर्ण तक मोक्ष में पहुँचा जा सके, ऐसा ग़ज़ब का हथियार है।

एडजस्टमेन्ट तो, तेरे साथ जो-जो डिसएडजस्ट होने आए, उसके साथ तू एडजस्ट हो जा। दैनिक जीवन में यदि सास-बहू के बीच या देवरानी-जेठानी के बीच डिसएडजस्टमेन्ट होता हो, तो जिसे इस संसार के घटनाचक्र से छूटना हो उसे एडजस्ट हो ही जाना चाहिए। पति-पत्नी में भी यदि कोई एक दरार डाले, तो दूसरे को जोड़ लेना चाहिए, तभी संबंध निभेगा और शांति रहेगी।

एडजस्ट हो जाना, वही धर्म है। इस दुनिया में तो प्लस-माइनस का एडजस्टमेन्ट करना होता है। माइनस हो वहाँ प्लस और प्लस हो वहाँ माइनस करना है। हम तो यदि कोई हमारी समझदारी को भी पागलपन कहे तो हम कहेंगे, हाँ, ठीक है। तुरंत उसे माइनस कर देते हैं।

'मनुष्य' तो किसे कहेंगे? 'जो एवरीव्हेर एडजस्टेबल हो जाए'! जिसे एडजस्टमेन्ट लेना नहीं आता, उसे लोग 'मेन्टल' (पागल) कहते हैं। इस रिलेटिव सत्य में आग्रह, ज़िद करने की ज़रा सी भी ज़रूरत नहीं है। अत: खुद के अहंकार को इतना अधिक डाउन ले जाना कि सबके साथ में मिलजुलकर रहा जा सके। अब अहंकार में क्या कोई पेच होता है कि ऐसे घुमाकर उसे डाउन किया जा सके? यानी समझदारी से होना चाहिए या नासमझी से होना चाहिए? और समझदारी का अहंकार हुआ हो तो उसमें भी हर्ज नहीं है, लेकिन यह तो नासमझी का अहंकार है! उसे क्या कहेंगे?

## मिलजुलकर रहने से बढ़ता है 'कॉमनसेन्स'

**प्रश्नकर्ता :** सभी के साथ मिलजुलकर रहना, ऐसा आपने कहा है न, लेकिन मुझे तो इसमें तिरस्कार जैसा रहता है।

**दादाश्री :** यह तिरस्कार है इसीलिए तो ऐसा हो गया है न! इसलिए अब तिरस्कार निकालकर सब के साथ मिलजुलकर चलेंगे तो अंदर कॉमनसेन्स बढ़ेगा। तिरस्कार तो गायों-भैसों का भी नहीं करना चाहिए, तो इन मनुष्यों के प्रति कैसे किया जा सकता है? किसी भी तरह का कौशल (होशियारी, समझदारी) तो है नहीं! आपके पास कौशल हो और तिरस्कार करो तो ठीक है कि 'भाई, बहुत कौशल वाले मनुष्य है इसलिए तिरस्कार कर रहे हैं'! लेकिन इनके पास तो कौशल भी नहीं है।

कौशल किसे कहते हैं, कि शादी करता है, लेकिन पूरी ज़िंदगी में पत्नी के साथ थोड़े बहुत झगड़े होते हैं, लेकिन हर रोज़ झगड़े नहीं होते, उसे कौशल कहते हैं। और जिसमें कौशल नहीं है, अगर वह शादी करे और पत्नी रूठकर दूसरी तरफ बैठ जाए, तब उसे इतना भी नहीं आता कि मनाऊँ किस तरह, तो फिर पत्नी का क्या होगा?

इसलिए मैं कहता हूँ न, कि इन सब के साथ बैठेंगे तो लोगों को आप पर प्रेम उत्पन्न होगा। और जब दूसरी बातचीत चलेगी, अपनी-अपनी बाते करेंगे, उसमें बात में से (सार) पकड़ लें तो कॉमनसेन्स बढ़ेगा अपना। सभी लोगों के साथ मिलजुलकर चलने से कॉमनसेन्स बढ़ता है।

## कॉमनसेन्स अर्थात् एवरीव्हेर एप्लिकेबल

आजकल की जनरेशन में कॉमनसेन्स जैसी चीज़ ही नहीं है। जनरेशन टु जनरेशन कॉमनसेन्स कम होता गया है।

एक स्त्री से मैंने पूछा कि, 'क्यों! पति के साथ तेरी नहीं बनती?' तब उसने कहा, 'दादाजी, अक्ल तो इतनी अधिक है कि पूछो ही मत'! तब मैंने कहा कि, 'तेरे लिए तो अच्छा है, पति अक्ल वाला है तो'! तब उसने कहा, 'लेकिन व्यवहारिकता है ही नहीं'। यानी क्या कहती है कि कॉमनसेन्स नहीं है, इसलिए बात-बात में झगड़े हो जाते हैं। फिर उस स्त्री ने मुझसे कहा कि, 'कॉमनसेन्स नहीं है, दादाजी, क्या करूँ?' तब मैंने कहा, 'सबकुछ समझ गया। अब तू और कोई बात ही मत करना'। यह तो मेल बैठेगा ही नहीं न! थोड़ा बहुत कॉमनसेन्स तो चाहिए या नहीं चाहिए मनुष्य में? व्यवहारिकता तो होनी चाहिए न?

यानी जिसमें कॉमनसेन्स नहीं हो न, उसका तो पत्नी के साथ एक घंटा भी मेल-मिलाप नहीं रहता। कॉमनसेन्स नहीं है इसीलिए गड़बड़ होती है न! उसकी शादी कर दी जाए तो क्या दशा होगी? आज उसकी वाइफ आई, रात को मिले, एक घंटे में तो दोनों अलग। 'हाउ टु डील' सब से पहले तो वही नहीं आता। बिगिनिंग कैसे की जाए, वही नहीं आता। कला वगैरह की ज़रूरत है या नहीं है?

**प्रश्नकर्ता :** है ही न! उसके बिना तो चलेगा ही नहीं।

**दादाश्री :** पति जो है, वह कॉमनसेन्स वाला चाहिए न? यह तो अगर कभी पत्नी से भूल हो गई, तो उसके साथ झगड़ा करने बैठ जाता है! अरे, झगड़ा करने के लिए भूल नहीं हुई!

कॉमनसेन्स वाला घर में या बाहर कहीं भी झगड़ा होने ही नहीं देता। इस गाँव में मतभेद रहित घर कितने हैं? आपका मतभेद होता है? मतभेद मतलब क्या? ताला खोलना नहीं आया! तो कॉमनसेन्स कहाँ से लाएँगे? जहाँ मतभेद होता है, वहाँ कॉमनसेन्स कैसे कहलाएगा?

मैं कॉमनसेन्स किसे कहता हूँ? एक व्यक्ति कहने लगा, 'कॉमनसेन्स तो मुझमें भी है'। मैंने कहा, 'ले न, ताला खोल (समस्या का हल ला) दे न! घर में पत्नी के साथ ताला बंद हो जाता है, वह तो खोलना नहीं आता। और तेरा बंद हुआ ताला तो हम खोल देते हैं'। इसलिए इस कॉमनसेन्स का अर्थ मैंने किताब में बताया है। कॉमनसेन्स का अर्थ क्या है? एवरीव्हेर एप्लिकेबल (सर्वत्र लागू)। क्या कहा?

**प्रश्नकर्ता :** एवरीव्हेर एप्लिकेबल, राइट।

**दादाश्री :** वह कॉमनसेन्स एवरीव्हेर एप्लिकेबल है, सभी तालों को वह खोल देता है। सभी प्रकार के, ज़ंग-वंग लगे हुए! कॉमनसेन्स वाला घर में मतभेद होने ही नहीं देता।

## व्यवहार शुद्धि के लिए कॉमनसेन्स

अब यह 'ज्ञान' मिलने के बाद आपको शुद्ध व्यवहार के लिए क्या चाहिए? कम्प्लीट कॉमनसेन्स चाहिए। वैसी स्थिरता चाहिए, उतनी गंभीरता चाहिए। सभी गुण उत्पन्न होने चाहिए न! वह अगर कच्चा रह जाएगा तो चलेगा नहीं और बाहर के लोग एक्सेप्ट भी नहीं करेंगे न! ताला बंद हो गया हो तो चाबी लगानी पड़ेगी न! एक ही चाबी से सभी ताले खुल जाएँ, ऐसी चाबी चाहिए। चाबी का गुच्छा रखने से नहीं चलेगा!

अत: यह जो कॉमनसेन्स है, वह व्यवहार शुद्ध रखने के लिए है और शुद्ध निश्चय कब रहेगा? शुद्ध व्यवहार होगा तब और शुद्ध व्यवहार कब आएगा? कॉमनसेन्स 'एवरीव्हेर एप्लिकेबल' होगा तब।

'कॉमनसेन्स' किस तरह से प्रकट होता

है? टकराव से। टकराव में खुद किसी से टकराए नहीं, सामने वाले टकराने आए फिर भी, खुद को टकराव में नहीं आना चाहिए। इस तरह रहे तो 'कॉमनसेन्स' उत्पन्न होता है! वर्ना, जो 'कॉमनसेन्स' है वह भी चला जाता है!

## ज्ञानी के चरणों में विकसित होता है पूर्ण कॉमनसेन्स

**प्रश्नकर्ता :** जिसमें कॉमनसेन्स हैं, उनका खुद का व्यवहार, वाणी ऐसे होते हैं कि सामने वाले को दुःख नहीं होता, राज़ी-खुशी से सब काम करवा लेते हैं, उनके पास ऐसी गिफ्ट होती है न?

**दादाश्री :** वह सब होता है, लेकिन मूलतः वे स्वार्थमय परिणाम होते हैं, वे अच्छे नहीं हैं। उनसे कम्प्लीट कॉमनसेन्स नहीं आ पाता। जहाँ ज़रा सा भी स्वार्थ हो न, वहाँ पूर्ण कॉमनसेन्स नहीं है। स्वार्थ नहीं हो तब सही है। फिर वह सामने वाले को राज़ी रखता है, वह बगैर स्वार्थ के राज़ी रखता है, उसे दुःख नहीं हो इसलिए। बाकी, जगत् तो अपने ही मतलब के लिए राज़ी रखता है, इसलिए उनका कॉमनसेन्स पूर्ण नहीं हो पाता, क्योंकि वह कॉमनसेन्स का उपयोग मतलब के लिए हुआ!

मेरा कहना यह है कि पूरी तीन सौ साठ डिग्री का कॉमनसेन्स नहीं होता, परंतु चालीस डिग्री, पचास डिग्री का तो आता है न? वैसा ध्यान में रखा हो तो? एक शुभ सोच पर चढ़ा हो तो उसे वह सोच याद आएगी और वह जागृत हो जाएगा। शुभ सोच के बीज पड़ते हैं, फिर वह विचारणा शुरू हो जाती है।

वह कॉमनसेन्स कहाँ से लाएँ? वह तो 'ज्ञानी पुरुष' के पास बैठें, 'ज्ञानी पुरुष' के चरणों का सेवन करें, तब कॉमनसेन्स उत्पन्न होता है।

## जीने की कला सिखाए कलाधर 'ज्ञानी'

मैं सभी से ऐसा नहीं कहता कि आप सभी मोक्ष में चलो। मैं तो ऐसा कहता हूँ कि 'जीवन जीने की कला सीखो'। 'कॉमनसेन्स' थोड़ा-बहुत तो सीखो लोगों के पास से! 'कॉमनसेन्स यानी एवरीव्हेर एप्लिकेबल-थ्योरिटिकली एज़ वेल एज़ प्रेक्टिकली।' (सैद्धांतिक भी और व्यवहारिक भी) चाहे जैसा ताला हो, जंग लगा हुआ हो या कैसा भी हो लेकिन चाबी डालें कि तुरंत खुल जाए, वह कॉमनसेन्स है। आपके ताले तो खुलते नहीं, झगड़े करते हो और ताले तोड़ते हो!

भले मोक्ष की ज़रूरत सब को नहीं हो, लेकिन कॉमनसेन्स की ज़रूरत तो सभी को है। यह तो कॉमनसेन्स नहीं होने से घर का खा-पीकर भी टकराव होते हैं। क्या सभी कालाबाज़ार करते हैं? फिर भी घर के तीन लोगों में शाम तक तैंतीस मतभेद पड़ जाते हैं। इसमें क्या सुख मिला? फिर ढीठ बनकर जीता है। ऐसा स्वमान रहित जीवन किस काम का? उसमें भी मजिस्ट्रेट साहब कोर्ट में सात वर्ष की सजा सुनाकर आए होते हैं, लेकिन घर में पंद्रह-पंद्रह दिन से केस पेन्डिंग पड़ा होता है। पत्नी के साथ बोलचाल बंद रहती है! तब हम मजिस्ट्रेट साहब से पूछें कि 'क्यों साहब?' तब साहब कहते हैं कि, 'पत्नी बहुत खराब है, बिल्कुल जंगली है'। अब पत्नी से पूछें, 'क्यों, साहब तो बहुत अच्छे आदमी हैं न?' तब पत्नी कहेगी, 'जाने दो न। रॉटन (नालायक) आदमी है'। अब, ऐसा सुनें तब से ही नहीं समझ जाएँ कि यह सारा जगत् पोलम्पोल है? इसमें करेक्टनेस जैसा कुछ भी नहीं है।

करेक्टनेस तो कब कहलाती है कि जीवन जीने की कला सीखा हो तब। वकील बना, फिर भी जीवन जीने की कला नहीं आई। डॉक्टर बना फिर भी वह कला नहीं आई। आप आर्टिस्ट

की कला सीख लाए या दूसरी कोई भी कला सीख लाए, वह कोई जीवन जीने की कला नहीं कहलाती। जीवन जीने की कला तो, कोई मनुष्य अच्छा जीवन जी रहा हो, उनसे आप पूछो कि 'आप यह किस तरह जीवन जीते हो, ऐसा कुछ मुझे सिखाओ। मैं किस तरह चलूँ? तो वह कला सीख सकते हैं। उसके कलाधर चाहिए, उसका कलाधर होना चाहिए, उसका गुरु होना चाहिए। लेकिन इसकी तो किसी को पड़ी ही नहीं है न! जीवन जीने की कला की तो बात ही खत्म कर दी है न! हमारे पास जो कोई रहता हो उसे यह कला मिल जाती है। फिर भी, पूरे जगत् को यह कला नहीं आती ऐसा हम से नहीं कहा जा सकता। परंतु यदि कम्प्लीट जीवन जीने की कला सीखे हुए हों न तो लाइफ इज़ी (जीवन आसान) रहती है, परंतु धर्म तो साथ में चाहिए ही।

जीवन जीने की कला में धर्म मुख्य वस्तु है। और धर्म में भी अन्य कुछ नहीं, मोक्षधर्म की भी बात नहीं, मात्र भगवान के आज्ञारूपी धर्म का पालन करना है। महावीर भगवान या कृष्ण भगवान या जिस किसी भगवान को आप मानते हों, उनकी आज्ञाएँ क्या कहना चाहती हैं, वे समझकर पालो। अब सभी नहीं पाली जा सकें तो जितनी पाली जा सकें, उतनी ठीक।

लोगों को व्यवहारधर्म भी इतना ऊँचा मिलना चाहिए कि जिससे लोगों को जीवन जीने की कला आए। जीवन जीने की कला आए, उसे ही व्यवहारधर्म कहा है। कोई तप, त्याग करने से वह कला नहीं आती। यह तो अजीर्ण हुआ हो, तो कुछ उपवास जैसा करना। जिसे जीवन जीने की कला आ गई उसे तो पूरा व्यवहारधर्म आ गया, और निश्चयधर्म तो डेवेलप होकर आए हों, तो प्राप्त होता है और इस अक्रम मार्ग में तो निश्चयधर्म ज्ञानी की कृपा से ही प्राप्त हो जाता है!

## कला से मतभेद टालकर, टालें दुःख

मैं आप सभी को यह जो बता रहा हूँ वह अपने आप पर ट्रायल (परिक्षण) लिए बिना नहीं बताता हूँ। सारी बातें ट्राय (प्रयोग) करने के बाद की हैं। क्योंकि जब ज्ञान नहीं था तब भी वाइफ के साथ मेरा मतभेद नहीं था। मतभेद यानी दीवार से सिर टकराना। लोगों को भले ही इसकी समझ नहीं है लेकिन मेरी समझ में आ गया था कि 'यह खुली आँखों से दीवार से टकराया', मतभेद पड़ा इसलिए!

हमें हीरा बा के साथ कभी भी वाणी में 'मेरा-तेरा' हुआ नहीं। लेकिन एक बार हमारे बीच मतभेद पड़ गया था (पड़ते-पड़ते रह गया था) । उनके भाई के वहाँ पहली बेटी की शादी थी। उन्होंने मुझसे पूछा कि, 'उन्हें क्या देना है?' तब मैंने उन्हें कहा कि, 'जो आपको ठीक लगे वह, लेकिन घर में ये चाँदी के बरतन पड़े हुए हैं, वे दे दीजिए! नया मत बनवाना'। तब उन्होंने कहा कि, 'आपके ननिहाल में तो मामा की बेटी की शादी हो तो बड़े-बड़े थाल बनवाकर देते हैं'! उन्होंने 'मेरे' और 'आपके' शब्द बोले तब से ही मैं समझ गया कि आज आबरू गई अपनी! हम एक के एक, वहाँ मेरा-तेरा होता होगा? मैं तुरंत ही समझ गया और मैं तुरंत ही पलट गया। मुझे जो कहना था उस पर से पूरा ही मैं पलट गया, मैंने उनसे कहा, मैं ऐसा नहीं कहना चाहता हूँ। आप चाँदी के बरतन देना और ऊपर से पाँच सौ एक रुपये देना, उन्हें काम आएँगे'। तब वे कहते हैं, 'हं... इतने सारे रुपये तो कभी दिए जाते होंगे! आप तो जब देखो तब भोले के भोले ही रहते हो, जिस किसी को देते ही रहते हो'! मैंने कहा, 'सच में, मुझे तो कुछ आता ही नहीं'।

देखो, यह मेरा मतभेद पड़ रहा था, लेकिन

किस तरह से सँभाल लिया पलटकर! अंत में मतभेद नहीं पड़ने दिया। पिछले तीस-पैंतीस वर्षों से हमारे बीच नाम मात्र का भी मतभेद नहीं हुआ है। बा (हीरा बा) भी देवी जैसे हैं! मतभेद किसी जगह पर हम पड़ने ही नहीं देते। मतभेद पड़ने से पहले ही हम समझ जाते हैं कि यहाँ से मोड़ लो, और आप तो सिर्फ दाएँ और बाएँ, दो तरफ से ही बदलना जानते हो कि ऐसे पेच चढ़ेंगे या ऐसे पेच चढ़ेंगे। हमें तो सत्रह लाख तरह के पेच घुमाने आते हैं, परंतु गाड़ी रास्ते पर ला देते हैं, मतभेद नहीं होने देते। अपने सत्संग में बीसेक हज़ार लोग और चारेक हज़ार (नियमित) महात्मा हैं, लेकिन हमारा किसी के साथ एक भी मतभेद नहीं है। जुदाई मानी ही नहीं मैंने किसी के साथ!

## किसी को दुःख न हो, ऐसा आदर्श व्यवहार

हमारा व्यवहार सुंदर होता है, आदर्श होता है, वहाँ क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं होते। पड़ोसी के साथ संबंध अच्छा होता है, घर में 'वाइफ' के साथ संबंध अच्छा होता है।

'ज्ञानी पुरुष' तो व्यवहार सहित होते हैं। उनका व्यवहार आदर्श व्यवहार होता है। आदर्श व्यवहार यानी किसी भी संसारी व्यक्ति का व्यवहार वैसा आदर्श नहीं होता है उतना आदर्श होता है। किसी भी संसारी व्यक्ति का, अरे! कोई साधु का भी वैसा आदर्श नहीं होता उतना उनका आदर्श व्यवहार होता है। आदर्श व्यवहार यानी सभी अड़ोस-पड़ोस वाले, सभी ऐसा कहते हैं कि, 'कहना पड़ेगा, उनका तो'! पड़ोस वाले उनसे उकताए नहीं होते हैं, व्यवहार उतना आदर्श होता है। व्यवहार तो आदर्श करना पड़ेगा न, कभी न कभी?

जब तक व्यवहार शुद्ध नहीं हो जाता तब तक मोक्ष नहीं है। व्यवहार के आधार पर ही मोक्ष है! व्यवहार आदर्श होना चाहिए, किसी और के लिए दुःखदायी नहीं हो, वैसा। किसी को किंचित्मात्र दुःख न हो, ऐसा अहंकार होना चाहिए। वह 'पॉज़िटिव' अहंकार है। हमारा संपूर्ण आदर्श व्यवहार होता है। जिसके व्यवहार में कुछ भी कमी होगी, वह मोक्ष के लिए पूरी तरह से लायक नहीं कहलाएगा। यदि व्यवहार कभी भी आदर्श नहीं होगा तो मोक्ष में जा ही कैसे सकते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, जा ही कैसे सकते हैं? बहुत अच्छी बात है!

**दादाश्री :** और व्यवहार आदर्श नहीं होगा तो उनके अड़ोस-पड़ोस वाले से हम पूछें कि भाई, इनका व्यवहार कैसा है? तब कहता है, 'बात जाने दो न, भाई'। जबकि हमारे घर पर तो, ये सभी बैठे हो न तो हीरा बा भी यहाँ पर (पैरों में) झूककर विधि करेंगे। यानी यहाँ तो अन्य कुछ है ही नहीं न?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, नहीं।

**दादाश्री :** परिवार वाले हमेशा विरोधी होते हैं, लेकिन यह एक ही केस ऐसा बन गया है कि परिवार वाले सभी इसमें नमस्कार में पड़े हैं। वर्ना, परिवार वाले विरोधी होते हैं हमेशा। गाँव वाले विरोधी होते हैं और यहाँ तो गाँव में भी किसी प्रकार का विरोध नहीं है। क्योंकि यह ज्ञान ही इस तरह का है।

**प्रश्नकर्ता :** ठीक है।

**दादाश्री :** घर वाले, सगे संबंधी भी, सभी नमस्कार करते हैं हमें। क्या करते हैं?

**प्रश्नकर्ता :** नमस्कार।

**दादाश्री :** वाइफ तो नमस्कार नहीं करती न?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं करती।

**दादाश्री :** हमारे वहाँ, हीरा बा भी यहाँ पर (पैरों में) स्पर्श करके नमस्कार करेंगी। हमारे घर पर पूछने जाओगे तो कहेगी कि, वे तो भगवान ही हैं! अरे, वे तो हमारे दर्शन भी करती हैं। यहाँ पैरों में सिर लगाकर दर्शन करती हैं। व्यवहार आदर्श-शुद्ध लगता है। आश्चर्य है न यह भी! आश्चर्य कहा जाएगा न, नहीं? यह ग्यारहवाँ आश्चर्य है! मैं नहीं होऊँगा तब सब छपेगा। दस आश्चर्य महावीर भगवान के समय तक हो गए और यह ग्यारहवाँ आश्चर्य है!

## ...इसलिए कहलाए भगवान

**प्रश्नकर्ता :** दादा, आप व्यवहारिक ज्ञान उच्च लाए थे, उसके साथ ही आपका व्यवहार भी आदर्श था न?

**दादाश्री :** मेरा व्यवहार आदर्श था! यानी मैं किसी को दुःख न हो, ऐसी स्थिति में रहता था। और किसी के साथ ज़रा भी ऊँचे आवाज़ से नहीं रहा, चालीस सालों से। किसी के साथ ऊँची आवाज़ नहीं की।

**प्रश्नकर्ता :** ज़रा भी नहीं?

**दादाश्री :** नहीं, किसी के साथ नहीं। वह भी जानते थे लोग, 'भगवान जैसे हैं', कहते थे। आसपास वाले ऐसा कहते थे, 'भगवान जैसे ही हैं, पहले से ही भगवान जैसे। हमारा सारा व्यवहार ही उन्हें सौंप दिया था'। और लोग डाँटना-करना हो, वे लोग अंदर ही अंदर लड़े हों न, तो वह सब बाँटना-करना मुझे ही करना होता था।

**प्रश्नकर्ता :** ऐसा!

**दादाश्री :** हाँ। झगड़ें-वगड़ें अंदर ही अंदर भाइयों-भाइयों में हों न, तो उन चारों भाइयों का सोना बाँटना हो न, तो उसे बाँटने मुझे ही जाना पड़ता था। यह इनका बाँटना पड़ता था, उनका बाँटना पड़ता था, वह सब मुझे बाँटना पड़ता था और वह बहुत अच्छी तरह से आता भी था।

**प्रश्नकर्ता :** आप यह भी कर देते थे?

**दादाश्री :** सबकुछ, आसपास वाले सबकुछ मुझे ही सौंप देते थे।

**प्रश्नकर्ता :** भगवान जैसे मानते थे। भगवान जैसे नीति वाले।

**दादाश्री :** भगवान जैसे मानते थे। और ये लोग कहते हैं कि, 'दादा तो ज्ञान देते हैं'। तब वे कहते हैं, 'आपने तो अभी ज्ञान लिया, हम तो ज़िंदगी भर लेते ही रहे हैं'! लेकिन अब उनका वह ज्ञान रहा है और यह ज्ञान अलग है। तो ये लोग उन्हें समझाने जाते थे, कि 'यह ज्ञान अलग प्रकार का है'। तो वे कहते हैं, 'वह अलग प्रकार का जो है, वही ज्ञान हमें मिला है'। यानी इस तरह से रह गया। इस तरह अधूरा रह गया उन सभी को। क्या हो सकता है, भला? और बंटवारा करना मुझे आता भी था न, फिर!

**प्रश्नकर्ता :** वे डॉक्टर कह रहे थे न, 'हम तो महावीर के परिवार वाले'। हमने कहा, कि आप ज्ञान लो। तो कहने लगे, 'वह ज्ञान तो हमारे घर में ही है। हम तो महावीर के परिवार वाले, हमारे घर में से ज्ञान कहाँ जाएगा...'

**दादाश्री :** ऐसा सबकुछ! घर-घर के कहकर, यों.. खा-पीकर मज़े!

**प्रश्नकर्ता :** बाहर वाले ले जाएँगे और ले गए।

**दादाश्री :** हाँ, यानी ऐसा। आसपास वाले से

पूछने जाओ, 'दादा (कैसे हैं!)?' 'वे तो भगवान जैसे पहले से ही थे।' इसलिए वे समझ नहीं पाए कि ये 'ज्ञानी' हो गए हैं, ऐसा। क्योंकि पहले से स्वभाव ऐसा था, न्यायी दृष्टिकोण, इसलिए लोग सबकुछ सौंप देते थे। इसलिए ये लोग पड़ोसियों से कहते थे कि, 'आप सभी पड़ोसियों ने लाभ नहीं उठाया?' 'अरे, वे तो छोटे थे, तब से हमने लाभ लिया ही है।' यानी पड़ोसियों को वह पता नहीं चला कि यह लाभ नयी तरह का है। इसलिए 'वैसे ही हैं वे' ऐसा करके। कहीं पर शोर नहीं, शराबा नहीं।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, दृष्टि चाहिए न? दृष्टि खुली हो तो लाभ मिलेगा न?

**दादाश्री :** बहुत, बहुत, बहुत दृष्टि खुलनी चाहिए।

मेरा जीवन कैसा था? अड़ोसी-पड़ोसी सभी लोग 'भगवान जैसे हैं', ऐसा कहते थे। उस समय तो भगवान हो नहीं गया था, ज्ञान नहीं था, फिर भी 'भगवान जैसे हैं' ऐसा सभी कहते थे। उसका क्या कारण था? संपूर्ण न्यायी था। इसलिए सभी अपनी सारी जायदाद दे देते थे। उसका बंटवारा करना हो और कुछ करना हो तब भी संपूर्ण विश्वास, ट्रस्ट। सभी का संपूर्ण विश्वासपात्र था।

## किसी के बहीखाते में हमारी अड़चनें जमा नहीं

आदर्श व्यवहार के बिना कोई मोक्ष में नहीं गया। मोक्ष में जाने के लिए आदर्श व्यवहार की ज़रूरत पड़ेगी। आदर्श व्यवहार मतलब किसी जीव को किंचित्मात्र दुःख नहीं हो, वह। घर वाले, बाहर वाले, अड़ोसी-पड़ोसी किसीको भी आप से दुःख नहीं हो वह आदर्श व्यवहार कहलाता है।

आदर्श व्यवहार से अपने से किसी को भी दुःख नहीं हो, उतना ही देखना है। फिर भी अपने से किसी को दुःख हो जाए तो तुरंत ही प्रतिक्रमण कर लेना। हम से कोई उनकी भाषा में नहीं जाया जा सकता। यह जो व्यवहार में पैसों के लेन-देन आदि व्यवहार हैं, वह तो सामान्य रिवाज है, उसे हम व्यवहार नहीं कहते। किसी को दुःख नहीं होना चाहिए, यह देखना है, और दुःख हुआ हो तो प्रतिक्रमण कर लेना, उसका नाम आदर्श व्यवहार।

हम से किसी को अड़चन हुई हो, ऐसा नहीं होता। किसी के खाते में हमारी अड़चन जमा नहीं मिलेगी। हमें कोई अड़चन दे और हम भी अड़चन दें तो हम में और आपमें फर्क क्या?

**प्रश्नकर्ता :** ज्ञानी के व्यवहार में दो व्यक्तियों के बीच भेद होता है?

**दादाश्री :** उनकी दृष्टि में भेद ही नहीं होता, वीतरागता होती है। उनके व्यवहार में भेद होता है। एक मिलमालिक और उसका ड्राइवर यहाँ आए, तो सेठ को सामने बिठाऊँगा और ड्राइवर को मेरे पास बिठाऊँगा, इससे सेठ का पारा उतर जाएगा! और प्रधानमंत्री आएँ तो मैं खड़ा होकर उनका स्वागत करूँगा और उन्हें बिठाऊँगा, उनका व्यवहार नहीं चूकूँगा। उन्हें तो विनयपूर्वक ऊपर बिठाऊँगा, और उन्हें यदि मेरे पास से ज्ञान ग्रहण करना हो, तो मेरे सामने नीचे बिठाऊँगा। लोकमान्य को व्यवहार कहा है और मोक्षमान्य को निश्चय कहा है। इसलिए लोकमान्य व्यवहार को उसी रूप में 'एक्सेप्ट' (स्वीकार) करना पड़ता है। हम उठकर उन्हें नहीं बुलाएँ तो उन्हें दुःख होगा, उसकी जोखिमदारी हमारी कहलाएगी।

सत्संग में से हम घर समय पर जाते हैं। यदि रात को बारह बजे दरवाज़ा खटखटाएँ तो वह कैसा दिखेगा? घर वाले मुँह पर बोलेंगे कि

'कभी भी आएँगे तो चलेगा'। परंतु उनका मन तो छोड़ेगा नहीं न! वह तो तरह-तरह का दिखाएगा। हमसे उन्हें ज़रा-सा भी दुःख कैसे दिया जाए? यह तो नियम कहलाता है और नियम के अधीन तो रहना ही पड़ेगा। इसी तरह दो बजे उठकर 'रियल' की भक्ति करें तो कोई कुछ बोलता है? ना, कोई नहीं पूछता।

## जहाँ व्यवहार आदर्श, वहाँ निश्चय आदर्श

अपना व्यवहार आदर्श होना चाहिए। व्यवहार ही ठीक नहीं हो तो उसका क्या करना है? लोग खुश हो जाएँ, ऐसा व्यवहार होना चाहिए। आदर्श व्यवहार अर्थात् आसपास पड़ोस में पूछो, घर में पूछो, 'एनीव्हेर' (चाहे) कहीं भी पूछो, तो हमारा व्यवहार आदर्श ही होता है। घर में, पत्नी के साथ, सभी रिश्तेदारों के साथ, किसी के लिए दुःखदायी नहीं होता, ऐसा व्यवहार होता है, वर्ना फिर उसने तो निश्चय पाया ही कहाँ है? व्यवहार आदर्श होना चाहिए। और यदि नहीं हो तो उसका ध्येय आदर्श व्यवहार का होना ही चाहिए! जितना व्यवहार आदर्श, उतना निश्चय प्रकट होने लगेगा।

'ज्ञानी पुरुष' का स्व-पर का विवेक तो बहुत उत्तम होता है। हम संसारी रूप में हैं फिर भी पड़ोसियों के साथ हमारा व्यवहार बहुत आदर्श होता है। आदर्श व्यवहार अर्थात् भगवान ने कहा है वैसा व्यवहार होता है। भगवान के कहे हुए में एक रत्ती भर भी बदलाव नहीं होता। हम में, सिर्फ इन कपड़ों के अलावा दूसरा कोई बदलाव नहीं होता। जहाँ आदर्श व्यवहार है वहाँ पर सब काम बन जाते हैं। आदर्श व्यवहार के बिना कभी भी निश्चय आदर्श नहीं होता। हमारा व्यवहार आदर्श ही होता है। जगत् ने देखा न हो, ऐसा होता है हमारा व्यवहार। हमारा व्यवहार मनोहर होता है, वर्तन भी मनोहर होता है, विनय भी मनोहर होता है। व्यवहार को हटाकर किसी ने भी आत्मा प्राप्त नहीं किया है। और जो (उस तरह) प्राप्ति की बात करते हैं, वह शुष्कज्ञान है। (व्यवहार) हटा दिया तो फिर रहा ही क्या? निश्चय कहाँ रहा?

**प्रश्नकर्ता :** व्यवहार को हटा देने से ऑटोमैटिक निश्चय को भी हटा ही दिया जाता है।

**दादाश्री :** निश्चय उत्पन्न ही नहीं होगा न, व्यवहार को हटा (छोड़) दिया हो तो। निश्चय नहीं है, ऐसा माना जाएगा। समभाव से *निकाल* नहीं करे और फिर कहे, 'हमें निश्चय से आत्मा प्राप्त हो गया है' तो वह नहीं चलेगा, बेस (नींव) होना चाहिए। आसपास वाले शिकायत करें और यह कहे कि 'मैं आत्मा हो गया', तो कैसे चलेगा? मेरे साथ रहने वाले सब लोगों से पूछा जाए, 'दादाजी आपको परेशान कर देते होंगे?' तब कहते हैं, 'नहीं'।

देखो न, हम मंच पर बैठे थे न! हमें (उसके प्रति) द्वेष नहीं रहता है। हो सके तब तक हम ऐसे व्यवहार में नहीं आते लेकिन जो है उसे हम *तरछोड़* (तिरस्कार सहित दुतकारना) नहीं लगाते। वहाँ भी ऐसा सारा नाटक करते हैं। हमें ऐसा नहीं है कि ऐसा करना है और वैसा करना है। आपको व्यवहार को *तरछोड़* नहीं लगानी है। जो भी व्यवहार हुआ, उसमें 'अंबालाल मूलजी भाई' व्यवहार सत्ता के अधीन है। 'हम' निश्चय सत्ता के अधीन हैं। 'हम' तो निश्चय सत्ता में ही हैं, स्वसत्ताधारी हैं। यानी कि व्यवहार को किंचित्मात्र भी *तरछोड़* नहीं लगनी चाहिए। यानी कि व्यवहार उदयकर्म के अधीन है लेकिन व्यवहार सत्ता हम कब कबूल करते हैं कि जब आदर्श हो तब, वर्ना नहीं। अतः व्यवहार को किंचित्मात्र भी हिलाना नहीं है।

## ज्ञानी का शुद्ध व्यवहार

हमारा व्यवहार सुंदर होता है। मैं पूरे दिन आदर्श व्यवहार में ही रहता हूँ। आसपास अगर पूछने जाओगे न, तो सभी कहेंगे, 'ये कभी भी लड़े ही नहीं हैं। कभी भी शोर नहीं मचाया है। कभी किसी पर गुस्सा नहीं हुए हैं'। सब लोग यदि ऐसा कहें तो वह आदर्श कहा जाएगा या नहीं?

फिर भी एक बार किसी को मेरे व्यवहार में कोई भूल दिखाई दी। उन्होंने मुझसे कहा कि, 'आपको ऐसा करना चाहिए न! यह आपकी भूल है'। मैंने कहा कि, 'भाई, आपने तो आज जाना, लेकिन मैं तो बचपन से ही जानता हूँ कि यह भूल वाला है'। तब कहते हैं कि, 'नहीं, बचपन में ऐसे नहीं थे, अभी हो गए हैं'। अत: ये सबकुछ अपनी-अपनी समझ से है। अत: हम पहले से ही अपना बता देते हैं कि, हम में कमी है शुरू से ही! तब फिर टकराव होगा ही नहीं न! उसका भी टाइम खराब नहीं होगा न और उसे दु:ख भी नहीं होगा!

हमारा यह व्यवहार शुद्ध के नज़दीक वाला है बिल्कुल। उसे शुद्ध कहोगे तो चलेगा।

**प्रश्नकर्ता :** तो फिर परफेक्ट (संपूर्ण) शुद्ध कैसा होता है? पहले यह बताइए।

**दादाश्री :** किंचित्मात्र शब्द से भी किसी को नुकसान न हो, मन से नुकसान नहीं, मन से नुकसान तो आप भी नहीं करते लेकिन शब्दों से और शरीर से नुकसान न पहुँचाए, वह बिल्कुल शुद्ध व्यवहार।

**प्रश्नकर्ता :** तब आप जो कहते हैं, आपका लगभग शुद्ध है तो उसमें और संपूर्ण शुद्ध में क्या अंतर है?

**दादाश्री :** यह हम जो कभी कहते हैं न, चार डिग्री कम है तो उससे अंतर पड़ता है।

## शुद्ध व्यवहार से शुद्ध निश्चय के स्पष्टीकरण

निश्चय शुद्ध है लेकिन व्यवहार शुद्धि किसे कहेंगे? कषाय रहित व्यवहार, वह व्यवहार शुद्धि है। फिर चाहे मोटा हो या दुबला हो या नाटा हो, काला हो या गोरा हो, उनमें वह देखने की ज़रूरत नहीं है लेकिन कषाय रहित है क्या? तो कहते हैं, 'हाँ', तब वह शुद्ध व्यवहार है।

अब, कषाय कहाँ उत्पन्न होते हैं? यदि व्यवहार में अत्यधिक दखल करे तो कषायी हो जाते हैं। जहाँ नियम होते हैं वहाँ कषाय होते हैं। 'अरे, खाने के समय नहीं जाना है, वहाँ गड़बड़ मत करना।' मन अंदर उल्टा घूमेगा, फिर कषाय बचाव करने की कोशिश करेंगे। अत: यहाँ तो कषाय हैं ही नहीं न। जब आना हो तब वापस आ जाते हैं।

कोई अपना हाथ काट ले, चाहे कितना भी तूफान मचाए, फिर भी उसे अन्य दृष्टि से मत देखना। उसमें शुद्धात्मा देखना। उल्टा विचार आया यानी कि 'व्हील' उल्टा घूमा। कोई माला पहनाने आए, पैर छूए तो वह भी अपना हिसाब है और फिर कोई मारे तब भी अपना हिसाब। आपको कोई गालियाँ दे, उस समय उसमें आपको शुद्धात्मा ही दिखने चाहिए, व्यवहार नहीं दिखना चाहिए। वह व्यवहार आपका हिसाब है। आपका भुगतने का जो हिसाब था, वह खत्म हो रहा है। इसीलिए वह ऐसा व्यवहार कर रहा है, लेकिन वह खुद तो शुद्ध ही है। इसलिए उसके प्रति शुद्धता की दृष्टि रहे तो वह शुद्ध निश्चय कहा जाएगा। आप शुद्ध हो और जगत् शुद्ध है। जितना शुद्ध उपयोग, उसे कहते हैं शुद्ध निश्चय, वही शुद्ध आत्मरमणता और तभी शुद्ध व्यवहार रहेगा। जितना शुद्ध निश्चय होगा उतनी ही व्यवहार शुद्धता रहेगी। एक तरफ निश्चय कच्चा है, अशुद्ध है तो उतनी व्यवहार अशुद्धता।

जहाँ पर आर्तध्यान व रौद्रध्यान नहीं होते, उसे 'व्यवहार शुद्धि' कहते हैं। शुद्ध व्यवहार यानी कि कषाय रहित व्यवहार।

## अहंकार, बुद्धि कम होंगे, वैसे सूझ बढ़ेगी

**प्रश्नकर्ता :** दादा, ये जो व्यवहार की सभी कुशलताएँ हैं, वे आपमें पहले से थीं?

**दादाश्री :** वे व्यवहार की कुशलताएँ बहुत अच्छी थी। बहुत अच्छी सूझ थी।

**प्रश्नकर्ता :** तो ऐसी सूझ सभी में क्यों नहीं होती?

**दादाश्री :** होती तो है, परंतु लोभ के कारण चली जाती है, उस तरफ बेध्यान रहता है। सूझ होती है, लेकिन उसे लोभ है इसलिए बेध्यान रहता है, तो उसमें वह सूझ क्या करेगी बेचारी? ये क्रोध-मान-माया-लोभ खा जाते हैं, लोगों की सूझ को। क्या कहा?

**प्रश्नकर्ता :** यानी सूझ होती तो है?

**दादाश्री :** होती है, सूझ तो होती है।

**प्रश्नकर्ता :** होती तो है ही, परंतु उसे जाग्रत करना होता है।

**दादाश्री :** परंतु सूझ भी दिन प्रति दिन, यदि आप उसकी ओर बेध्यान नहीं रहो न, तो फिर सूझ की उम्र बढ़ती जाती है।

**प्रश्नकर्ता :** ठीक है।

**दादाश्री :** लेकिन आप तो आपके क्रोध-मान-माया-लोभ में, यानी उसकी ओर बेध्यान ही रहते हो, तो फिर क्या हो सकता है? जबकि हम तो उस सूझ में ही जाग्रत रहते हैं।

**प्रश्नकर्ता :** लेकिन सूझ तो आत्मा का 'डिरेक्ट' (सीधा) प्रकाश है न?

**दादाश्री :** नहीं, वह 'डिरेक्ट' प्रकाश नहीं है लेकिन अंतरसूझ, वह तो एक प्रकार की कुदरती 'गिफ्ट' (भेट) है। उसी के आधार पर संसार में किस प्रकार से रहना और किस प्रकार से नहीं, वह सब दिखाती रहती है।

**प्रश्नकर्ता :** सूझ में बुद्धि नहीं आती?

**दादाश्री :** नहीं। बुद्धि तो फायदा और नुकसान ही दिखाती है, बाकी कुछ नहीं दिखाती।

अब, इसमें बुद्धि और दर्शन दो चीज़ है। सूझ पड़ना, वह दर्शन में जाता है। वह पूर्व जन्म की गिफ्ट है, पिछले जन्म की, फ्री ऑफ कॉस्ट (मुफ्त) गिफ्ट है। और दूसरा, जितनी चित्तशुद्धि हुई हो उतना लाभ होगा। यानी चित्तशुद्धि, गिफ्ट, ये सब इन लोगों ने बुद्धि में डाल दिया है और बुद्धि को महत्व दे दिया है। बुद्धि, वह महत्व देने जैसी चीज़ नहीं है। सूझ, वह सबसे बड़ी गिफ्ट है और फिर वही दर्शन है।

**प्रश्नकर्ता :** सूझ जो है, वह मनुष्य खुद के जन्म के साथ ही लाता होगा न?

**दादाश्री :** अनंत जन्मों से। सूझ के बगैर तो गाड़ी आगे चलती ही नहीं न! सूझ तो शुरू से साथ है ही। एक तरफ सूझ भी है और एक तरफ बुद्धि भी है। बुद्धि में अहंकार मिला होता है। सूझ में अहंकार नहीं मिला होता।

**प्रश्नकर्ता :** जब सूझ पड़ती है, तब सूझ में सूझ है या अहंकार बोलता है, यह पता नहीं चलता।

**दादाश्री :** अहंकार के प्रतिस्पंदन हैं इसीलिए मनुष्य सूझ का पूरा-पूरा लाभ नहीं उठा सकता। सूझ तो हर एक को पड़ती ही रहती है। जैसे-जैसे अहंकार शून्यता को प्राप्त करता जाता है, वैसे-वैसे सूझ बढ़ती जाती है।

## हमारी सूझ, वह तो कुदरती बख्शीश

मुझ में वही ज़्यादा थी, सूझ बहुत जबरदस्त! जहाँ-तहाँ से स्पष्टीकरण आ जाता था। यानी शाम को दस-पंद्रह व्यक्ति पूछने आते थे, उनका निबेड़ा आ जाता था!

कई लोगों में सूझ नहीं होती। सूझ तो महापुण्यशालियों में होती है! सूझ क्या काम करती है? जब उलझा हुआ व्यक्ति आया हो न, तब उसे निराधारपन लगता है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, वह सूझ नहीं है इसलिए।

**दादाश्री :** हाँ, निराधारपन लगता है। लेकिन बाद में यों थोड़ी देर बैठे, फिर भीतर से सूझ पड़ जाती है कि 'ऐसा करो न, कुछ हर्ज़ नहीं'। अतः फिर चल पड़ा। इस तरह सूझ पड़ जाती है भीतर। वह कुदरती बख्शीश है, वह पुरुषार्थ नहीं है। अलग-अलग प्रकार की सूझ होती है।

## विपुलमति के कारण तुरंत ही सार निकाले

**प्रश्नकर्ता :** (पत्र पढ़ते हैं) 'इन भाई ने अपने लेखन में पूज्य दादाश्री की दो लाक्षणिकताओं को निर्देशित किया है : वे हैं विपुलमति और अंतर सूझ'।

**दादाश्री :** विपुलमति और अंतर सूझ। ऐसा कह रहे हैं कि मैंने दादा में वे पहले से ही देखी है।

**प्रश्नकर्ता :** लाक्षणिकता।

**दादाश्री :** फिर आगे?

**प्रश्नकर्ता :** (पत्र पढ़ते हैं) 'घटना छोटी और क्षुद्र हो, परंतु उसमें से नया गहरा रहस्य खोजने की सूझ दादा में है। सामान्य प्रसंग में भी गहरा रहस्य ढूँढ निकालना...'

**दादाश्री :** यह अंतर सूझ अज्ञानता में थी और विपुलमति अर्थात् क्या? पुस्तक पकड़ते थे न, तो तुरंत आधे घंटे में ही उसका पूरा सार खींच लेते थे। फिर तुरंत ही रख देते थे इतनी बड़ी, मोटी किताब।

**प्रश्नकर्ता :** (पत्र पढ़ते हैं) 'वे किताब के पन्ने पलटकर उसके सार तत्त्व को शीघ्र ग्रहण कर लेते हैं।

**दादाश्री :** हाँ। सभी पढ़ रहे हों और फिर उसी पढ़े हुए का गहरा रहस्य मुझे मिल जाता था और उनको नहीं मिलता था।

**प्रश्नकर्ता :** तो उस समय कुछ वह दृष्टि थी न, कि जिसे जिज्ञासावृत्ति कहो या खोजवृत्ति कहो, या जो चीज़ चाहिए, वह इसमें है या नहीं, या उस चीज़ का कितना इसमें है, ऐसा खोज लेते थे आप?

**दादाश्री :** ये क्या कहना चाहते हैं, इसमें कुछ..., इस कहने वाले व्यक्ति में कुछ बरकत है या नहीं, इतना ही देख लेता था। यों देखते-देखते तो उनकी बरकत देख लेता था। उनमें बरकत नहीं दिखती, तो फिर छोड़ देता था, पढ़कर। पढ़कर नहीं, परंतु उसके एक-एक वाक्य को चाहे कहीं से भी पकड़कर, उनमें क्या बरकत है, वह देख लेता था। क्योंकि इतनी पुस्तकें, कितनी सारी पुस्तकें हैं, लाइब्रेरी में क्या पुस्तकों की कमी है? मैं पुस्तक को पसंद करने में बहुत देर लगाता था। पसंद करने के बाद उसमें बरकत है या नहीं वह देख लेता था। वहाँ हज़ार पुस्तकों में से एकाध पुस्तक में ज़रा सी मुझे बरकत दिखाई देती थी। बाकी के लोगों ने तो अपने अहंकार के बारे में ही बताया है। कुछ बरकत नहीं है।

हमें तो पहले से ही जगत् के एक-एक

शब्द का विचार आता था। पहले भले ही ज्ञान नहीं था, परंतु विपुलमति थी इसलिए बोलते ही खुलासा हो जाता था, चारों तरफ से तोल हो जाता था। बात निकलते ही तुरंत सार निकल जाता था, इसे 'विपुलमति' कहते हैं। विपुलमति होती ही नहीं किसी में! 'यह' तो एक्सेप्शन (अपवाद) केस हो गया है! जगत् में विपुलमति कब कही जाती है? एवरीव्हेर एडजस्ट कर दे, ऐसी मति होती है। यह तो जिसे कच्चा काटना हो, उसे पका देते हैं और पकाना हो, उसे कच्चा काट देते हैं, तो कहाँ से एडजस्ट होगा? परंतु एवरीव्हेर एडजस्ट होना चाहिए।

## पूर्व जन्म का सामान बहुत ऊँचा लाए थे

**प्रश्नकर्ता :** दादा, यह जो कॉमनसेन्स है, वह कैसे आता है? यह जो अंतरसूझ जिसे कहते हैं, वह कैसे...?

**दादाश्री :** नहीं, वह तो पूर्व का है सबकुछ।

**प्रश्नकर्ता :** वह पूर्व का है?

**दादाश्री :** पूर्व का। पूर्व का सामान सारा लेकर आया था। लेकर आए है न, इसलिए तुरंत सभी का समझ में आ जाता है। सभी की उलझनें निकाल देता था। इसीलिए 'अंबालाल भाई' कहते थे न, वर्ना कोई कहता होगा? छः अक्षर से कोई बुलाता है? यों चार अक्षर बोलने में भी कठिनाई होती है लोगों को।

**प्रश्नकर्ता :** वह सही है।

**दादाश्री :** सभी की, पाँच सौ लोगों को उलझनें हुई हों न, तो ज्ञान नहीं था तब भी सारी उलझनें निकाल देता था। सॉल्यूशन किए थे, हाँ। फिर सिर्फ मेरे ही नहीं, सभी के। सभी जो आते थे न, वे सभी उलझे हुए होते थे। तो भीतर से निकलता था। इस अलमारी में माल बहुत अच्छा था। पूर्व जन्म में कुछ किया था न, ऐसा!

**प्रश्नकर्ता :** इससे पहले संसार के हल आते थे, अब यहाँ हमेशा के हल आने लगे!

**दादाश्री :** हाँ...

**प्रश्नकर्ता :** दादा, आप लोगों की उलझनों का हल ला देते थे इसलिए ऐसी बुद्धि, बुद्धिकला डेवेलप हो गई थी न?

**दादाश्री :** वह तो चाहे जो भी हो, परंतु पूर्व जन्म का माल बहुत अच्छा लाए थे! यों ही दिवाली के दिन लोग पैर छूने आते थे, दोस्त, भागीदार-वागीदार सभी।

**प्रश्नकर्ता :** वह पिछले जन्म का पुण्य है न?

**दादाश्री :** पुण्य तो है परंतु यह माल बहुत अच्छा भरकर लाए थे, पूर्व का! व्यवहारिकता बहुत थी, पूरा ज्ञान और वह सब लेकर आए थे। वह ज्ञान तो, जब यह प्रकट हुआ तब ज्ञान हुआ, वर्ना तब तक बुद्धि के रूप में था।

## तटस्थता से उलझनें सुलझाते

**प्रश्नकर्ता :** ज्ञान से पहले आपमें तटस्थता बहुत रहती थी। किसी की कुछ भी बात आए तो उसे आप तटस्थतापूर्वक देखते थे, उससे बहुत से प्रॉब्लेम हल हो जाते थे।

**दादाश्री :** हाँ, हल आ जाते थे। तटस्थता से देखता था।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, तटस्थता बहुत थी, वर्ना हल नहीं आते।

**दादाश्री :** तटस्थता से। इसलिए लोगों का बहुत प्रेम संपादन किया था। बड़ौदा में, सभी जाति वाले। अहमदाबाद के पाटीदार ही नहीं,

काठीयावाड़ के पाटीदार, अपने चरोतर के पाटीदार, इस तरफ के पाटीदार, उत्तर गुजरात के पाटीदार। जैन बनिए ही नहीं, गाँव के जैन, यहाँ के जैन, सभी। वे शादी में सबसे पहले मुझे बुलाते थे। उनकी ज़रा आबरू बढ़ जाती थी। वे कहते थे, 'अच्छे व्यक्ति माने जाते हैं'। और मेरा रूआब जम जाता था। मुझे जो चाहिए था, वह मुझे मिल गया। उन्हें जो चाहिए था वह...

यानी मुझे हर एक कम्यूनिटी वाले ने स्वीकार किया था। वन ऑफ द हेड मेम्बर्स (एक मुख्य सदस्य) की तरह। पैसे (ज़्यादा) नहीं थे परंतु मेरे पास जबान बहुत अच्छी थी! और कुलीनता अच्छी थी! ऊँची कुलीनता थी! बड़े-बड़े सेठ, जब मैं जाता तब इधर-उधर हो जाते थे, ऐसी मेरी पर्सनालिटी थी, अमीरी नहीं थी। अमीर तो, अपनी गाड़ी चले उतने ही। वे पाँच, पचास हज़ार.. लाख रुपये, दो लाख पड़े हों वे और कुछ नहीं। और पैसे व्यापार में थे।

**प्रश्नकर्ता :** दादा, परंतु आपकी ज्ञान से पहले की भूमिका में जबरदस्त तटस्थता दिखाई देती है। ज्ञान होने से पहले के जीवन में जबरदस्त तटस्थता रहती ही थी ऐसे, रिलेटिव में भी।

**दादाश्री :** हाँ. पहले से रहती थी।

**प्रश्नकर्ता :** और उसके कारण लोगों की बहुत सी उलझनें सुलझा देते थे।

**दादाश्री :** हाँ, बहुत सी सुलझा देते थे।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, क्योंकि आपको कुछ लेना-देना नहीं था।

**दादाश्री :** वे उलझनें सुलझ जाती थी, इसीलिए मेरे वहाँ गाड़ियाँ रखते थे।

**प्रश्नकर्ता :** परंतु उस जगह आपकी भूमिका ऐसी थी कि उसमें शामिल हुए बगैर आप देख सकते थे। जबकि वे लोग शामिल होकर देखते थे।

**दादाश्री :** हाँ।

**प्रश्नकर्ता :** इसीलिए उन्हें समझ में नहीं आता था।

**दादाश्री :** इसीलिए वे मेरे पीछे घूमते रहते थे और मुझे यह स्वाद चाहिए था, 'आइए, अंबालाल भाई' और ऐसा-वैसा। वहाँ जाए तो पहले चाय-पानी सबकुछ यों हमें चाहिए था। बस, इतना ही, रुपये वगैरह की झंझट नहीं थी।

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, नहीं। वह तो इन बातों पर से समझ में आता है। वह एक प्रकार की जबरदस्त पूँजी थी कि चीज़ को तटस्थ रूप से उसके सभी पहलू एक साथ देख सकते थे।

**दादाश्री :** हाँ, दिखाई देते थे सभी। वह भी था, बोधकला पहले से रहती थी। ज्ञानकला नहीं थी परंतु बोधकला थी। बोधकला! ये जो सब बोल रहा हूँ न अभी, वे सभी बोधकलाएँ थीं।

यदि व्यवहार शुद्ध हो जाए तभी मोक्ष होगा। वर्ना इन सभी बातों से कोई मोक्ष नहीं होगा। व्यवहार की सभी कड़ियाँ मिलनी चाहिए। वे सभी कड़ियाँ हमारे पास हैं। बोधकला और ज्ञानकला, दोनों ही कलाएँ हमारे पास हैं। बोधकला से व्यवहार शुद्ध होता है और ज्ञानकला से मुक्ति होती है। ये दोनों ही कला हैं, इनसे अपना काम निकाल लेना!

## दादा सिखाए 'टॉप' व्यवहार की समझ

**प्रश्नकर्ता :** अध्यात्म में तो आपकी बात के बारे में कुछ कहना ही नहीं है, परंतु व्यवहार में भी आपकी बात 'टॉप' की बात है।

**दादाश्री :** ऐसा है न, कि व्यवहार में

'टॉप' का समझे बिना कोई मोक्ष में गया नहीं है, चाहे जितना बारह लाख का आत्मज्ञान हो, लेकिन व्यवहार समझे बिना कोई मोक्ष में गया नहीं! क्योंकि व्यवहार छोड़ने वाला है न! वह न छोड़े तो आप क्या करोगे? आप 'शुद्धात्मा' हो ही, परंतु व्यवहार छोड़े तब न! आप व्यवहार को उलझाते रहते हो। झटपट हल लाओ न!

हम भी व्यवहार की सूक्ष्म से सूक्ष्म बात करते हैं, उसका क्या कारण है? हम ज्ञान में रहते हैं। उस समय ज्ञान हाज़िर होता है। व्यवहार के बेसमेन्ट पर यह ज्ञान रहा (आधारित) है। पहले यह व्यवहार सीखना है। व्यवहार की समझ के बिना तो लोग तरह-तरह की मार खाते हैं।

## ज़िंदगी भर लोगों के दिल तृष्ट किए

मैं व्यवहार में अच्छे से रहता था। अत: सभी जाति वाले लोग मुझे पहचानते थे, सारे। अहमदाबादी पाटीदार, जैन हों, गाँव के जैन हों, शहर के जैन हों, लुहाणा वगैरह, बाकी सभी पहचानते थे। उस वजह से अंबालाल भाई हो गए थे प्रख्यात, जब लग्नपत्रिकाएँ आती थीं तब वहाँ पर भी शकुन देकर आता था। अब, मुझे कोई बेटी की शादी नहीं करानी थी, न ही बेटे की शादी करानी थी। मुझसे लोग कहते भी थे, 'आपको तो कोई बेटे-बेटी की शादी नहीं करानी है, तो किसलिए शकुन देते हैं?' तब मैंने कहा, मेरा नाम हो इसलिए वहाँ पर शकुन देता हूँ। जबकि इसमें कभी भी नाम नहीं होता, उल्टा ये तो पैसे जाते हैं। फिर भी सभी जाति वालों के वहाँ जाता था और दो-तीन लोगों की बेटियों की शादी भी करवा दी थी। पर वे हमारे वहाँ जो नौकरी करते थे उनकी। शादी करवाई यानी ज़्यादा नहीं, दो-तीन हज़ार दिए थे। तीन हज़ार रुपये हो तो हो जाता था, उस जमाने में।

**प्रश्नकर्ता :** उस जमाने में दो-तीन हज़ार में हो जाता था, सही है।

**दादाश्री :** तो हज़ार हमारी कंपनी के बोनस के तौर पर देता था और दो हज़ार मेरे घर से दे देता था। लेकिन इस तरह करवा देता था। लोगों के दिल तृष्ट किए थे, दिल दुभाए नहीं थे। अभी भी मैं आपके दिल तृष्ट नहीं करता सभी के? आप मेरा तृष्ट करते हो या मैं आपके तृष्ट करता हूँ?

**प्रश्नकर्ता :** नहीं, नहीं आप हमारा तृष्ट करते हो। यदि आपका दिल तृष्ट करना होता तो वह हमारा कैसा पुण्य!

**दादाश्री :** उन लोगों के दिल तृष्ट किए थे। वही मुख्य चीज़ है, दिल तृष्ट करना! वह पैसे देने से नहीं होता। तीर्थंकरों ने कितने ही लोगों के दिल तृष्ट किए थे। उन्हें हमेशा के नमस्कार हैं! यह तो निरे दु:ख का समुद्र है। आधि-व्याधि-*उपाधि* (परेशानी), तीन प्रकार के ताप सुलग रहे हैं। इससे पहले तो लकड़ी की अग्नि से सुलगते थे, अभी तो पेट्रोल की अग्नि से सुलगते हैं। कितनी आधि-व्याधि और *उपाधि* हैं न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

## सुपरह्यूमन के गुण दिखे बचपन से

**प्रश्नकर्ता :** दादा, यह जानना था कि आपको ज्ञान होने से पहले इसकी कुछ पूर्वभूमिका तो तैयार हो रही होगी न? एकदम तो ज्ञान नहीं हो जाता न?

**दादाश्री :** पूर्वभूमिका थी, मुझे लोग सुपरह्यूमन कहते थे, बाईस साल की उम्र में। मेरे मित्र सर्कल वाले थे, वे 'आपका व्यवहार सुपरह्यूमन जैसा है', ऐसा कहते थे। क्या कहते थे?

**प्रश्नकर्ता :** सुपरह्यूमन।

**दादाश्री :** सुपरह्यूमन किसे कहते हैं, साहब?

**प्रश्नकर्ता :** जो महामानव, परम आत्मा हो, उसे।

**दादाश्री :** नहीं, अपने सुख की ज़रूरत खुद को हो फिर भी जो दूसरों को दे देता है, वह सुपरह्यूमन कहलाता है। या तो आप मेरा दस बार नुकसान करो, फिर भी आपको परेशानी आए तो मैं आपको हेल्प करूँ, वह सुपरह्यूमन कहलाता है।

## नुकसान करने वाले को भी हेल्प करनी चाहिए

**प्रश्नकर्ता :** यानी अपकार करने वाले पर उपकार करने वाला?

**दादाश्री :** हाँ, अपकार करने वाले पर उपकार करने वाला। वह आसान चीज़ नहीं है, अपकार पर उपकार करना। इंसानियत किसे कहते हैं? किसी ने उपकार किया हो उसका उपकार न भूले और उस पर सामने से उपकार कर दे। और दैवी मनुष्य, सुपरह्यूमन किसे कहते हैं? आप दोबारा नुकसान करो तब भी वह दोबारा अच्छा करे। मैं अपना स्वभाव नहीं छोड़ता। आप अपना...

**प्रश्नकर्ता :** वह अपना स्वभाव नहीं छोड़ता।

**दादाश्री :** मुझसे एक व्यक्ति ने पूछा था, कि 'मैंने आठ-आठ, दस-दस बार आपका उल्टा किया फिर भी आप सीधा करते हो, उसका क्या कारण है?' मैंने कहा, 'मैं अपना स्वभाव नहीं चुका और आप अपना स्वभाव नहीं चुके'। तब वह कहने लगा, 'क्या आप समझते नहीं हैं?' मैंने कहा, 'नहीं, यह सब समझकर कर रहा हूँ। मैं कुछ भोला व्यक्ति नहीं हूँ'।

फिर मित्र मुझसे कहने लगे, 'ऐसा तो होता होगा?' यह व्यक्ति नुकसान करके गया और उसे आप ऊपर से हेल्प कर रहे हैं? अरे, जो नुकसान करता है उसे ही हेल्प करनी होती है और किसे हेल्प करनी होती है? जब नुकसान करता है, तब हमें समझ में नहीं आना चाहिए कि यह व्यक्ति बहुत दुःखी है! उसे ही हेल्प करनी है।

## सुपरह्यूमन को बरतता है भीतर का सुख अपार

सुपरह्यूमन तुझे समझ में आया?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, ख्याल आ गया। सामने वाला व्यक्ति ठीक से न बरते फिर भी हम उसके साथ अच्छे से बरते, वह सुपरह्यूमन है।

**दादाश्री :** वह अपकार करे न, फिर भी हमें उपकार करते रहना है। तुझे समझ में आया?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** तो अब, तुम्हारा क्या मत है?

**प्रश्नकर्ता :** मेरा मत सुपरह्यूमन के बारे में विचार करने का है। सुपरह्यूमन की तरफ मत है।

**दादाश्री :** क्या बात कर रहे हो तुम? वह उल्टा करे तो भी?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** ऐसा! अच्छा है। परंतु यदि मनुष्य यह समझ जाए कि इसके जैसी डिग्री मुझे मिलेगी तो वह सीधा चलेगा या नहीं चलेगा? वह सब जान जाएगा न, उसके बाद अपने भीतर भाव या विचार करेगा न?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, ठीक है।

**दादाश्री :** जब मैं बाईस साल का था तब यह सुपरह्यूमन शब्द भी मुझे पता नहीं था। तब मेरे फ्रेन्ड सर्कल में एक व्यक्ति बहुत बुद्धिशाली थे न, वे कहने लगे, 'भाई, आपकी बात तो नहीं हो सकती, आप सुपरह्यूमन व्यक्ति हैं'। मुझे ऐसा

लगा कि भला मैं सुपरह्यूमन? मुझमें सुपरह्यूमन जैसा क्या है? मुझे तो मेरे दोष ही दिखाई देते थे। मुझे तो मेरे जो दोष थे, वे ही खटकते रहते थे न?

**प्रश्नकर्ता :** सही बात है।

**दादाश्री :** परंतु उन सभी को सुपरह्यूमनपन दिखाई देता था। सभी जगह सारा व्यवहार सुपरह्यूमन जैसा लगता था। तब मैंने पूछा, 'सुपरह्यूमन यानी क्या?' तब कहने लगे, 'देखो, आप कितनी बार लोगों पर उपकार करते हो और फिर भी जब लोग नुकसान करते हैं तब भी आप लेट-गो (छोड़ देना) करते हैं और फिर वापस उपकार करते हो'। उन दिनों उस व्यक्ति ने सुपरह्यूमन का अर्थ समझाया था, वह तुम्हें समझा रहा हूँ। मुझे 'सुपरह्यूमन' कहते थे और मुझे उसमें बहुत इन्टरेस्ट आता था। क्योंकि भीतर सुख बहुत बरतता था न! बाहर का कपड़ा फट गया हो, परंतु अंदर का बहुत सुख था। बाहर तो लोग लूट जाते थे, परंतु अंदर का सुख बहुत बरतता था!

## परायों के सुख के लिए जीने वाले को कैसा दुःख?

जिसने अपना सुख सामने वाले को दे दिया, खुद ने उसका उपयोग नहीं किया और दूसरों को दे दिया, कि मैं भले ही भूखा हूँ लेकिन यह भूखा होगा, 'ले, तू खा ले, भाई', तो वह सुपरह्यूमन है, वह देवगति के सुख भोगेगा। और इसमें क्या सुख है? हम खा लें उसमें क्या मिलेगा? किसी को संतोष होता है न, तो हमें आनंद हो जाता है! कितना अधिक आनंद होता है उस समय! खुद खा लें उसमें कैसा आनंद, किसी को हुआ क्या? रोज़ काजू ही खाते रहते हैं न और सबकुछ खाते ही रहते हैं न, लेकिन किसी के चेहरे पर मैंने आनंद नहीं देखा! परंतु जब कोई खाता है न, तो हमें कितना आनंद होता है!

मुझ में बाईसवे साल में अहंकार, बेहद पागलपन था। परंतु फिर भी मुझे सुपरह्यूमन कहते थे। क्योंकि मेरा अपना सुख सारी ज़िंदगी लोगों को दे दिया था। मेरा अपना जो भी सुख था न, उसे भी दे दिया था, मेरे पास रहने ही नहीं दिया था। मैं तो दे देता था। क्योंकि मुझे उसमें सुख लगता ही नहीं था। सुख इसमें है ही कहाँ भला? यह तो भ्रांति से मानें तो इसमें सुख है, बाकी इसमें कुछ फेक्ट, करेक्ट (सही) चीज़ नहीं है। सुख तो जो बिना महेनत के प्राप्त हो, उसे सुख कहते हैं। यह तो हेन्डल मारकर (महेनत करके) और सुखी होना, उसका क्या अर्थ है भला?

और यदि मुझे सुख न मिले तो उसका हर्ज़ नहीं है, आप सभी को सुख होना चाहिए। पहले से ही ऐसा स्वभाव था। मेरे सुख की ओर तो मैंने देखा ही नहीं, मेरी पूरी ज़िंदगी में नहीं देखा। और मेरा अपना व्यापार भी पूरी ज़िंदगी नहीं किया। लोगों के सुख के लिए ही जीवन बीता है। और मुझे दुःख आया भी नहीं। क्योंकि परायों के लिए जीने वाले को कुछ दुःख हो सकता है क्या? फिर मुझे और क्या चाहिए? पैसे रखने के लिए बैंक जाने में जिसे उकताहट होती है, फिर बैंक में से लेकर आने में जिसे उकताहट होती है, चेक लिखने में जिसे उकताहट होती है, उसे और क्या चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** कुछ भी नहीं।

## लोगों को सुख देना, हो सके उतना

**दादाश्री :** लोगों को सुख देना, हो सके उतना। पैसे न हों तो ऑब्लाइज करना, कुछ और करना, अनेक प्रकार का होता है। सिर्फ पैसे से

ही सुख नहीं दिया जाता। परंतु किसी के काम करके, चक्कर लगाकर, कोई उलझन में हो तो उसे अच्छी समझ देकर (सुख दे सकते हैं) । डाकखाने जा रहे हो तो पड़ोसी से पूछें, कि 'भाई, आपको डाक का कोई काम है तो मुझे बताओ, मैं करता आऊँगा'। क्या हर्ज़ है भाई?

**प्रश्नकर्ता :** कुछ हर्ज़ नहीं है, दादा।

**दादाश्री :** मैं तो बचपन में, घर से सब्ज़ी लेने निकलता था न, तो पड़ोसी से भी पूछकर जाता था कि आपको सब्ज़ी लानी है? एक चक्कर में चार चक्कर (के काम) हो जाए। पूरी ज़िंदगी परायों के लिए ही बिताई है।

## परायों के लिए जीने में दिखाई दिया फायदा

मैं तो यों ही जाते-आते बाहर निकलता, उन दिनों ज्ञान नहीं हुआ था, तो जब भी निकलता था तब लोगों के मन में मेरे प्रति अधिक भाव होते थे कि ये अंबालाल आए तो अच्छा। ज्ञान नहीं हुआ था तब भी भाव बहुत थे। क्योंकि मेरे अपने लिए ज़िंदगी भर मैंने किया ही नहीं। व्यापार चला अंत तक, अभी तक चला, परंतु मेरे अपने लिए मैंने नहीं किया। और जगत् क्या करता है? किसके लिए करता है?

**प्रश्नकर्ता :** अपने लिए।

**दादाश्री :** हाँ, हमने दूसरों के लिए ही लाइफ बिताई है। अपना काम या अपने खुद के बारे में नहीं देखा है, सामने वाले की ही परेशानियाँ मैं हमेशा देखता था। अपने खुद के लिए कुछ भी करने का नहीं देखता था, लेकिन हमेशा सामने वाले की परेशानियाँ ही देखता था और उन्हें दूर करता था। मेरा व्यापार यों ही चलता रहता था। सामने वाले को क्या अड़चन हो रही है, वह देखता था।

**प्रश्नकर्ता :** इस प्रकार का विश्वास आपको कब से हुआ था, कि व्यापार तो चलता ही रहता है ऐसा?

**दादाश्री :** वह तो कितने ही जन्मों का। यह तो, एक जन्म का नहीं है सबकुछ, पहले के जन्मों का है यह और उसके फलस्वरूप यह आया है और उससे यह सब चलता रहता है। और इसमें (दूसरों को मददरूप होने में) फायदा है, ऐसा दिख गया था।

## परायों के लिए जीता है, उसे संसार असर नहीं करता

मैंने क्या किया था? पुण्य ही बंधन किया था। अब वह पुण्य किस प्रकार का था? 'आपको क्या अड़चन है? भाई, आपको क्या अड़चन है?' मेरी तो चिंता ही नहीं की थी, दूसरों की ही चिंता की। मेरा तो कर्म के उदय से जो होना होगा वह होगा, परंतु दूसरों की ही चिंता।

दूसरों के लिए ही मैं जीता था, मेरे अपने लिए मैं जीया ही नहीं। एक घंटे के लिए भी मैं अपने लिए नहीं जीया। अभी भी मैं परायों के लिए ही जीता हूँ। मेरे लिए तो जीना रहा ही नहीं है, अब। ऐसा आप कितने ही समय से नहीं देखते, जब से मिले हो तब से?

**प्रश्नकर्ता :** देखा है।

**दादाश्री :** तो ऐसी ही लाइफ थी, पूरी ही लाइफ। मेरी पूरी ज़िंदगी ऑब्लाइजिंग में ही बीती है। घर में मैंने इसका उपयोग नहीं किया है। सभी को दिया है।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, बात सही है।

**दादाश्री :** क्योंकि (अपने लिए) उपयोग करने का मेरा स्वभाव ही नहीं है। किसी को

काम आए। मैं तो अहंकार भी करता था न, तो कैसा करता था? पच्चीस-तीस साल की उम्र में भी अहंकार करता था न, वह भी विचित्र प्रकार का अहंकार करता था। ये भाई मुझसे मिले और यदि इन्हें लाभ न हुआ तो मेरा मिलना व्यर्थ था। इसलिए हर एक व्यक्ति को लाभ मिला।

आम का पेड़ क्या कहता है? मुझसे कोई मिला और आम का सीज़न हो और यदि सामने वाले को लाभ न हो तो मैं आम का पेड़ ही नहीं। भले ही छोटा हो तो छोटा, तुझे ठीक लगे वैसा, परंतु तुझे उससे लाभ तो होता है न! वह आम का पेड़ खुद कुछ लाभ नहीं उठाता। ऐसे कुछ विचार तो होने चाहिए न! और यदि पुण्यरूपी मित्र चाहिए तो इस पेड़ से सीख ले, कि योग-उपयोग परोपकाराय। इस पेड़ से तू सीख ले, कि यह आम का पेड़ तुझे आम देता है, ऊपर से डंड़ा (जिससे आम तोड़े जाए ऐसी लकड़ी) मारे तब भी आम देता है। यों डंड़ा मारे न, तब भी आम देता है। पत्थर मारे तब भी आम देता है। वह आम ही खिलाता है। जलाने के लिए लकड़ी चाहिए तो काटने देता है। लकड़ियाँ देता है, सबकुछ देता है। उसे आपसे कुछ भी नहीं चाहिए और आप चिपक गए हो उस पर मालिकीपन का दावा करके। वह अपनी जमीन में उगा है और आप कहते हो, 'यह मेरी जमीन है'। वह आम का पेड़ नहीं जानता कि यह जशु-भाई की जमीन है, कि मैं जशु-भाई का आम का पेड़ हूँ, ऐसा। यह तो जशु-भाई चिपक गए हैं। 'यह जमीन हमारी है और यह आम का पेड़ हमारा है', ऐसा कहते हैं। परंतु उस आम के पेड़ का सारा योग और उपयोग सब परोपकार के लिए है!

**प्रश्नकर्ता :** परोपकार के लिए है।

**दादाश्री :** तो मनुष्य का भी ऐसा होना चाहिए। मनुष्य के लिए 'योग-उपयोग परोपकाराय' यानी क्या? उसका क्या अर्थ है? तब कहते हैं, यह मन-वचन-काया का योग, वह परायों के लिए होना चाहिए। परोपकार के लिए होना चाहिए। और उपयोग यानी क्या? तब कहते हैं, बुद्धि-अहंकार वे सब परायों के लिए। 'योग-उपयोग परोपकाराय।'

**प्रश्नकर्ता :** आप्तवाणी-3 में लिखा है, 'यह लाइफ यदि परोपकार के लिए जाएगी तो आपको कोई भी कमी नहीं रहेगी। किसी तरह की आपको अड़चन नहीं आएगी। आपकी जो-जो इच्छाएँ हैं, वे सभी पूरी होंगी'।

**दादाश्री :** अब और कौन से धर्म करने हैं? इसमें कोई कर्मकांड और क्रियाकांड की ज़रूरत है ऐसी? यहाँ परोपकार के लिए हर एक काम कर न! जो परायों के लिए जीता हो न, उसे संसार बहुत असर नहीं करता। ऐसे कुछ ही लोग होते हैं।

## मुझसे मिला इसलिए उसे लाभ होना ही चाहिए

तुझे समझ में आया कि, किसी के उपकार में आना, उसमें फायदा है? वह तू मुझे बता। किसी के उपकार में आना, तुझे अच्छा लगता है या उपकार करना अच्छा लगता है?

**प्रश्नकर्ता :** उपकार करना अच्छा लगता है।

**दादाश्री :** तो वह ध्येय पक्का कर ले, कि हम से पाँच-दस हज़ार लोगों को भी कुछ शांति प्राप्त हो, लाभ हो। हमारे द्वारा कुछ भी प्राप्त करें। बचपन से मैंने तय करके रखा था कि यदि कोई भी व्यक्ति मुझसे मिला तो उसे लाभ होना ही चाहिए। मैं बीस साल (की उम्र) में भी ऐसा ही कहता था, कि जो मुझसे मिला उसे लाभ होना चाहिए। यह मुझसे क्यों मिला?

तू किस पुण्य के आधार पर मुझसे मिला? फादर-मदर भी मुझसे मिले तो उन्हें लाभ होना ही चाहिए, मैं ऐसा निश्चय वाला व्यक्ति था। वर्ना हमारे अपशकुन हुए लोगों को, ऐसा हमारे किस काम का? हम से लोगों को लाभ नहीं होना चाहिए?

**प्रश्नकर्ता :** होना ही चाहिए, अवश्य, लाभ होना ही चाहिए।

**दादाश्री :** सिर्फ खुशी नहीं, परंतु उसे लाभ होना चाहिए।

**प्रश्नकर्ता :** हाँ।

**दादाश्री :** कोई मुझे गालियाँ दे रहा हो, उसे भी लाभ होना चाहिए। यह सिद्धांत मेरा बचपन से था। यदि मेरी वजह से शकुन न हो रहे हों, अपशकुन हो रहे हों तो मैं मनुष्य ही कैसा? लाभ होना ही चाहिए न, कि 'दादा मिले तो मुझे लाभ हुआ'। देखो, शकुन हुए न! पर होते भी थे। मेरी भावना थी न, यह।

**प्रश्नकर्ता :** जयंती-भाई को तो बहुत लाभ हुआ, दादा।

**दादाश्री :** यह तो, बचपन से हममें भाव था। यह ज्ञान होने से पहले का भाव था कि मुझसे मिला तो कुछ भी उसे सांसारिक फायदा होना ही चाहिए और न हो तो मेरा अस्तित्व ही काम का नहीं है। सांसारिक फायदे के लिए लोग आते थे बेचारे और अगर फायदा न हो उसका, तो मीनिंगलेस (व्यर्थ) है। ऐसी बातें करने का क्या अर्थ है? फायदा होना ही चाहिए। वह चाहे कितना भी नालायक हो, उसे मुझे नहीं देखना है। परंतु मैं उसे मिला और यदि मेरी तरफ से सुगंध न आए तो क्या फायदा? यह अगरबत्ती नालायक को सुगंध देती है या नहीं देती?

**प्रश्नकर्ता :** देती है। नालायकों को भी देती है, सभी को देती है।

**दादाश्री :** उसी तरह यदि मेरी सुगंध का तुझ पर असर नहीं हुआ तो फिर इसे मेरी सुगंध ही नहीं कही जाएगी! अर्थात् कुछ तो लाभ होना ही चाहिए, ऐसा नियम था मेरा।

## मुझसे मिला उसे सुख होना ही चाहिए

अभी हमारे मामी पचासी साल के हैं। तो मेरे मन में ऐसी इच्छा थी कि इन मामी ने मुझे बचपन में उठा-उठाकर इधर से उधर घूमाया था, वह मुझे अभी भी याद है। इसलिए मामी इस ज्ञान को किस तरह से पाए, तो मामी भी ऐसे पा गए है, कि निरंतर उन्हें दादा.. भानजे-भाई ही याद आते रहते हैं। और 'मैं शुद्धात्मा हूँ', अभी भी ऐसा शुद्धात्मा रहता है। अभी सभी जगह की यात्रा करवा कर आया हूँ। अपनी गाड़ी लेकर गए थे। तो मामी, मामा के सभी बेटे इस ज्ञान को कैसे पाए, ऐसी भावना.. क्योंकि मुझसे मिलें थे ... और एक मामा ऐसे थे न, वे ज़रा से ऐसे ही, औलिया जैसे थे। तो वे मुझे ज्ञान होने से पहले ऐसा कहने आए थे। मुझसे कहने लगे, 'भानजे भाई, आपके पास कुछ है और मुझे कुछ दो, मैं आपका मामा हूँ न'! वे मेरी उम्र के थे, समान उम्र के थे। तब कहने लगे, 'मैंने आपको बेर खिलाए थे, खिरनी खिलाई थी। वह सब मैं आपको नहीं खिलाता था? और आप तो पहले से कृष्ण जैसे थे। आपका चारित्र तो कृष्ण भगवान जैसा था। आप तो कृष्ण जैसे थे। दही खा जाते थे, मक्खन खा जाते थे, वह सब मुझे याद है। अत: मेरा कुछ काम कर देना'। मैंने कहा, 'मामा, कर देंगे काम'। फिर उन्हें भी ज्ञान दिया। मामा अभी घूमते-फिरते हैं। 'बस, हो गया काम! अब एक सत्संग स्थल बनवा रहा

हूँ और दादा का सत्संग हमारे गाँव में शुरू कर देंगे', ऐसा कहते थे।

मेरे मन में इतना रहता था कि मुझे मिला तो उसे कुछ भी सुख होना ही चाहिए, मेरे निमित्त से। यदि धर्म प्राप्त न हो, तो व्यापारिक फायदा हो, ऐसा भी उसे होना चाहिए। मुझसे क्यों मिला? इसलिए उसका यह दंड है(!) क्या कहा?

**प्रश्नकर्ता :** उसे भी फायदा हो, इस निमित्त से।

**दादाश्री :** मुझसे मिला इसलिए दंड! बचपन से ही यह भावना थी, कि मुझसे मिला तो उसे कुछ न कुछ सुख होना ही चाहिए। वर्ना मेरा मिलना व्यर्थ जाएगा।

**महात्माओं :** जय सच्चिदानंद!

**दादाश्री :** इतना अधिक इगोइज़म रखता था कि मैं मिला और यदि उसे दुःख रहा, तो मेरे मिलने का क्या अर्थ? ऐसा मुझमें इगोइज़म था। मैं मिला तो! 'मैं' यानी क्या? देव जाने, उन दिनों दूसरों का भला करने राम निकले थे!

## खोला फ्री ऑफ कॉस्ट दवाखाना

मामा की पोल में आसपास वाले सभी से कह दिया था कि हम घर के डॉक्टर हैं। तो जिसे कुछ भी अड़चन हो वह कहना। तो हमारे बिना फीस के डॉक्टर अच्छे। बिना फीस के डॉक्टर क्या गलत है? अड़चनें कम हो जाती है न, सामने वाले की तो!

**प्रश्नकर्ता :** आपकी बात में बहुत मज़ा आता है। उसका वर्णन कीजिए न!

**दादाश्री :** लाइफ बहुत अलग प्रकार की बीती है न, इसलिए यह ज्ञान प्रकट हुआ है। पैसे की ज़रूरत नहीं थी, कुछ लोभ-वोभ नहीं। घर पर रहू तो सुबह के समय, वह दवाखाना होता है न, तो दवाखाने की तरह चार-पाँच लोग आ जाते थे। कहते थे, 'मेरी नौकरी का अभी ठिकाना नहीं है, तो पंचायत वालों से आपकी पहचान है न? ऐलेम्बिक में (उस नाम का कारखाना) आपकी पहचान है न? फिर उसे चिठ्ठी लिख देता था। तो नौकरी वालों के लिए नौकरी, व्यापार वाले के लिए व्यापार न चल रहा हो, तो उसे अच्छे-अच्छे रास्ते बताता था। इस तरह फ्री ऑफ कॉस्ट दवाखाना कौन खोलेगा? आपने फ्री ऑफ कॉस्ट दवाखाना खोला है क्या? कॉस्ट लेकर करते हो न?

हमारा बैंक में कुछ ज़्यादा नहीं था, यानी पैसे-वैसे नहीं परंतु शुरू से ही स्वभाव ऐसा था कि घर का (अपने स्वार्थ का) काम ही नहीं किया। और उदय में जैसा आया, वैसा ही बरता हूँ। घर में जो कोई भी आता था न, उससे पूछता था कि 'आपको क्या अड़चन है? आपका ऐसा हुआ या नहीं हुआ? पत्नी के साथ झगड़ा हुआ था, वह ठीक हुआ या नहीं हुआ? आप उस समय आत्महत्या करने का सोच रहे थे, तो वे विचार बंद हो गए या नहीं हुए?' यही किया है ज़िंदगी भर। सारा दिन यही झंझट, और कुछ नहीं। जो कोई भी आता था न, उससे इसी तरह से पूछता था। उसे क्या दुःख है? किस के दुःख में है, वह पूछता था। चाहे कैसी भी ठंड हो, धूप हो, बारिश हो, तो हमने इसी तरह से किया है सबकुछ अभी तक।

## जगत् को हेल्पफुल होते हुए पहुँच सकते हैं अंतिम ध्येय तक

आपने कुछ लूट लिया दादा को?

**प्रश्नकर्ता :** हाँ, लूटा ही है न!

**दादाश्री :** क्योंकि ऐसे लूटने का समय

दोबारा नहीं मिलेगा और आपका दुःख नहीं रहना चाहिए। मुझसे मिलने के बाद यदि दुःख रहता हो, तो मेरा मिलना बेकार है। यह तो, मान लो कि जब स्कूल में था तभी से मेरी यह आदत थी। यह ज्ञान होने बाद तो यह आदत है, कि इन लोगों का दुःख हमेशा के लिए चला जाना चाहिए। और जब ज्ञान नहीं हुआ था तब तक, यदि कुछ दुःख हो तो उसके लिए हमें हेल्प करनी चाहिए। यही काम था, हेल्प करते ही रहनी है। चाहे किसी भी तरह से हेल्प करता था। पूरी ज़िंदगी हेल्पिंग (मदद करने) में ही बीती है और मेरे जीवन का ध्येय सफल हो गया है। कितने ही लोग मेरे हाथ से सफल हुए हैं। इसलिए तू कुछ ध्येय पक्का करके रखना, ऐसा कि, जगत् के लिए उपकारी हो जाए। जगत् यानी कुछ लोगों के लिए, कुछ अधिक लोगों के लिए आप हेल्पफुल हो जाएँ, उपकारी हो जाए और यही अपना मार्ग है! ध्येय तक पहुँचते, पहुँचते, पहुँचते अपना ध्येय संपूर्ण करने का रास्ता यही है।

## व्यवहार में दादा की सूक्ष्म खोज

क्रमिक मार्ग मतलब शुद्ध व्यवहार वाले होकर शुद्धात्मा होना और अक्रम मार्ग मतलब पहले शुद्धात्मा होकर फिर शुद्ध व्यवहार करो। शुद्ध व्यवहार में व्यवहार सभी होता है, लेकिन उसमें वीतरागता होती है। एक-दो जन्मों में मोक्ष जाने वाले हों, वहाँ से शुद्ध व्यवहार की शुरुआत होती है। शुद्ध व्यवहार स्पर्श नहीं करे, उसे 'निश्चय' कहते हैं! व्यवहार उस तरह पूरा करना कि निश्चय को स्पर्श नहीं करे।

अब शुद्धात्मा होने के बाद में शुद्धात्मा तो निरंतर शुद्ध ही रहता है, हमेशा के लिए। वह पद हम अपने आसपास के माहौल के आधार पर देख सकते हैं कि, ओहोहो! किसी को दुःख नहीं होता, किसी को ऐसा नहीं होता इसलिए हम शुद्ध हो गए हैं। जितनी अशुद्धि, उतनी ही सामने वाले को अड़चन और खुद को अड़चन। खुद की अड़चन कब मिटती है? जब 'यह' ज्ञान मिलता है तब। और जब खुद से सामने वाले की अड़चन मिट जाए तब हम पूर्ण हुए।

यह 'अक्रम विज्ञान' व्यवहार को नहीं हिलाता। प्रत्येक 'ज्ञान', व्यवहार का तिरस्कार करता है। यह विज्ञान व्यवहार का किंचित्मात्र तिरस्कार नहीं करता और खुद की 'रियालिटी' में संपूर्ण रहकर व्यवहार का तिरस्कार नहीं करता है। जो व्यवहार का तिरस्कार नहीं करे, वही सैद्धांतिक वस्तु होती है। सैद्धांतिक वस्तु किसे कहते हैं कि जो कभी भी असैद्धांतिकता को प्राप्त न हो, वह सिद्धांत कहलाता है। कोई ऐसा कोना नहीं है, जहाँ असिद्धांत हो। अर्थात् यह 'रियल साइन्स' है, 'कम्प्लीट साइन्स' है। व्यवहार का किंचित्मात्र भी तिरस्कार नहीं करवाता!

हमने इस संसार की बहुत सूक्ष्म खोज की है। अंतिम प्रकार की खोज करके हम ये सब बातें कर रहे हैं। व्यवहार में किस तरह रहना चाहिए, वह भी देते हैं और मोक्ष में किस तरह जा सकते हैं, वह भी देते हैं। आपकी अड़चनें किस तरह से कम हों, वही हमारा हेतु है।

मनुष्य ने जब से किसी को सुख पहुँचाना शुरू किया तब से धर्म की शुरुआत हुई। खुद का सुख नहीं, लेकिन सामने वाले की अड़चन कैसे दूर हो, यही रहा करे, वहाँ से कारुण्यता की शुरुआत होती है। हमें बचपन से ही सामने वाले की अड़चन दूर करने की पड़ी थी। खुद के लिए विचार भी नहीं आए, वह कारुण्यता कहलाती है। उससे ही 'ज्ञान' प्रकट होता है।

**जय सच्चिदानंद**

## आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सानिध्य में सत्संग कार्यक्रम

### अडालज

**12 अगस्त** (शनि) शाम 5-30 से 7 - **सत्संग** और **13 अगस्त** (रवि) शाम 4 से 7-30 - **ज्ञानविधि**

**15 अगस्त** (मंगल) - **पूज्यश्री के नए आवास 'वात्सल्य' का ओपनिंग**

**30 अगस्त** (बुध) - **रक्षाबंधन के अवसर पर विशेष कार्यक्रम**

**7 सितम्बर** (गुरु) - रात 10 से 12-15 - **जन्माष्टमी के अवसर पर विशेष भक्ति कार्यक्रम**

**11 सितम्बर** (सोम) - **पूज्यश्री के दर्शन का कार्यक्रम**

**12 से 19 सितम्बर : आप्तवाणी 14 भाग-3 पर सत्संग पारायण** (हिन्दी-अंग्रेजी में ट्रान्सलेशन उपलब्ध रहेगा।)

**नोट :** आप्तवाणी-14 भाग-3 गुजराती बुक के पेज नंबर 239 से वाचन होगा।

### पूणे

**18 अगस्त** (शुक्र) शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** और **19 अगस्त** (शनि) शाम 6-30 से 10 - **ज्ञानविधि**

**स्थल :** गणेश कला क्रीड़ा मंच, नेहरू स्टेडियम परिसर, स्वारगेट बस स्टेन्ड़ के पास, पूणे। **संपर्क :** 7875740566

### रायपुर

**22 अगस्त** (मंगल) शाम 4-30 से 7-30 - **सत्संग** और **23 अगस्त** (बुध) शाम 4-30 से 8 - **ज्ञानविधि**

**स्थल :** पंडित दीन दयाल उपाध्याय ओडिटोरियम, सायन्स कॉलेज परिसर, आमानाका, GE रोड़, रायपुर।

**संपर्क :** 8889944333

### दिल्ली

**26 अगस्त** (शनि) शाम 5-30 से 8-30 - **सत्संग** और **27 अगस्त** (रवि) शाम 5 से 8-30 - **ज्ञानविधि**

**स्थल :** तालकटोरा इंडोर स्टेडियम, तालकटोरा लेन, तालकटोरा गार्डन, राष्ट्रपति भवन क्षेत्र, नई दिल्ली।

**संपर्क :** 9810098564

---

## 'दादावाणी' के सदस्यों के लिए सूचना

हिन्दी और अंग्रेजी भाषाओं में दादावाणी पत्रिका हर महिने 15वी तारीख को पोस्ट की जाती है। जिन महात्माओं को 'दादावाणी' पत्रिका विलंब से या तो अनियमित रूप से मिलती है, वे पूर्व प्राप्त पत्रिका के कवर पर अपना नाम, पता, पीनकोड आदि जाँच कर लें। यदि उसमें कोई भूल हो तो आपका ग्राहक नं, पूरा नाम-पता, पीनकोड के साथ लिखकर मोबाईल नं. 8155007500 पर SMS करें। आप अडालज त्रिमंदिर के पते पर पत्र से या dadavani@dadabhagwan.org पर इ-मेइल से भी सूचित कर सकते हैं। जिससे आपकी यहाँ दर्ज की गई जानकारी में सुधार किया जा सके। यदि आपको दादावाणी का अंक न मिले तो उपर दिए गए कोई भी माध्यम से हमें सूचित करें। यदि अंक स्टोक में होगा तो आपको फिर से भेजा जाएगा।

---

**त्रिमंदिरो के संपर्क : अडालज :** 9328661166-77, **राजकोट :** 9924343478, **भूज :** 9924345588, **मुंबई :** 9323528901, **अंजार :** 9924346622, **मोरबी :** 9924341188, **सुरेन्द्रनगर :** 9737048322, **अमरेली :** 9924344460, **वडोदरा :** 9574001557, **गोधरा :** 9723707738, **जामनगर :** 9924343687. **अन्य सेन्टरों के संपर्क : अहमदाबाद ( दादा दर्शन ) :** 9574001445, **वडोदरा ( दादा मंदिर ) :** 9924343335, **दिल्ली :** 9810098564, **बैंगलूर :** 9590979099, **कोलकता :** 9830080820 **यु.एस.ए.-केनेडा:** +1 877-505-3232, **यु.के.:** +44 330-111-3232, **ऑस्ट्रेलिया:** +61 402179706

# पूज्य नीरूमाँ / पूज्य दीपकभाई को देखिए टी.वी. चैनल पर...

## भारत

- **'दूरदर्शन गिरनार'** पर रोज सुबह 7-30 से 8-30, रात 9 से 10
- **'अरिहंत'** चैनल पर हर रोज सुबह 2-50 से 3-50, दोपहर 2-30 से 3 तथा रात 8 से 9
- **'वालम'** पर हर रोज शाम 6 से 6-30 **( सिर्फ गुजरात राज्य में )**
- **'साधना गोल्ड गुजराती'** पर हर रोज सुबह 7 से 8 तथा रात 8 से 9
- **'दूरदर्शन उत्तरप्रदेश'** पर हर रोज दोपहर 3 से 4 **( हिन्दी में )**
- **'साधना'** पर हर रोज सुबह 7-50 से 8-15 तथा रात 9-30 से 9-55 **( हिन्दी में )**
- **'दूरदर्शन सह्याद्रि'** पर हर रोज सुबह 7 से 7-45, शनि-रवि सुबह 11-30 से 12, सोम से शुक्र दोपहर 3-30 से 4 **( मराठी में )**
- **'आस्था कन्नड़ा'** पर हर रोज दोपहर 12 से 12-30 तथा शाम 4-30 से 5 **( कन्नड़ा में )**
- **'दूरदर्शन चंदना'** पर हर रोज शाम 6-30 से 7
- **'आस्था हिन्दी'** पर हर रोज रात 10 से 10-20 **( हिन्दी में )**

## USA - Canada

- **'TV Asia'** - पर हर रोज सुबह 7-30 से 8 EST

## U K

- **'MA TV'** पर हर रोज शाम 5-30 से 6-30 GMT

## Australia

- **'Rishtey'** पर हर रोज सुबह 8 से 8-30 तथा दोपहर 1-30 से 2 (हिन्दी में)

## Fiji - NZ - Singapore - SA - UAE

- **'Rishtey-Asia'** पर हर रोज सुबह 6 से 6-30 तथा 7-30 से 8 (हिन्दी में)

## USA - UK - Africa - Australia

- **'आस्था ग्लोबल'** पर सोम से शुक्र रात 10 से 10-30 (डीश टीवी चेनल **UK**-849, **USA**-719) **( गुजराती और हिन्दी में )**

जुलाई 2023
वर्ष-18 अंक-9
अखंड क्रमांक - 213

# दादावाणी

Date Of Publication On 15th Of Every Month
RNI No. GUJHIN/2005/17258
Reg. No. G-GNR-348/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
LPWP Licence No. PMG/NG/036/2021-2023
Valid up to 31-12-2023
Posted at Adalaj Post Office
on 15th of every month.

## ज्ञानी सिखाए आदर्श व्यवहार

यह जो व्यवहार में पैसों के लेन-देन वगैरह में व्यवहार हैं, वह तो सामान्य रिवाज है, उसे हम व्यवहार नहीं कहते। आप से किसी को दुःख नहीं होना चाहिए, यह देखना है और दुःख हुआ हो तो प्रतिक्रमण कर लेना, उसका नाम आदर्श व्यवहार! हमारा आदर्श व्यवहार होता है। हम से किसी को भी अड़चन हुई हो, ऐसा नहीं होता। किसी के खाते में हमारी अड़चन जमा नहीं मिलेगी। हमें कोई अड़चन दे और हम भी अड़चन दें तो हम में और आप में फर्क क्या? मोक्ष में जाने के लिए आदर्श व्यवहार चाहिए। आदर्श व्यवहार मतलब किसी जीव को किंचित्मात्र दुःख नहीं हो, वह। घर वाले, बाहर वाले, अड़ोसी-पड़ोसी किसी को भी आप से दुःख नहीं हो, वह आदर्श व्यवहार कहलाता है।

- दादाश्री

Printed and Published by Dimple Mehta on behalf of Mahavideh Foundation - Owner. Printed at Amba Multiprint, Opp. H B Kapadiya New High School, Chhatral - Pratappura Road, At - Chhatral, Tal : Kalol, Dist. Gandhinagar – 382729.